वीर कुंवरसिंह

वीरेन्द्र मोहन रतूडी

उमेश प्रकाशन ५, नाथ मार्केट, नई सडक, दिल्ली-६

किशोर-उपन्यास-माला-क्रम : ३२

वीर कुंवरसिंह

वीरेन्द्र मोहन रतूडी

उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट, नई सड्क, दिल्ली-६

© **उमेश प्रकाशन, दिल्ली**

◎ **प्रकाशक**

उमेश प्रकाशन,

५, नाथ मार्केट, नई सडक, दिल्ली-६

◎ **मुद्रक**

उपमा प्रिन्टर्स,

फैज रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-५

◎ **आवरण मुद्रक**

परमहंस प्रेस,

वरियागंज, दिल्ली

◎ **आवरण**

जगदीश चड्ढा

◎ **माव-चित्र**

जगदीश चड्ढा

◎ **संस्करण १९६८**

◎ **मूल्य**

दो रुपए

Veer Kunwar Singh

(Novel for Juveniles)

by Virendra Mohan Raturi

Price: Rs. 2.00

◎◎◎

अगर आप सोचते हैं कि बच्चों के अच्छे उपन्यास हिन्दी में नहीं हैं, तो निश्चय ही आपको हमारी किशोरों के लिए उपयोगी पुस्तकें पढ़ने या देखने का अवसर नहीं मिला है। एक- दो या चार-दस नहीं, बल्कि ६५ से भी ज्यादा किशोर-उपन्यास हम प्रकाशित कर चुके हैं, आगे और प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विषय भी हमने अनेक चुने हैं। ऐति- हासिक नायक-नायिकाए, 'अरब की रातों' के राजा-रानी, ज्ञान-विज्ञान का अनोखापन, रामायण और महाभारत के पात्र, राष्ट्र और विभिन्न धर्मों के नायक, शिकार की रोमांचकारी घट- नाए, प्रख्यात साहित्यकारों कर जीवन और शेक्सपियर के नाटकों के रूपान्तर - कोई भी तो विषय ऐसा नहीं, जिसकी जानकारी निहायत दिलचस्प उपन्यासों के माध्यम से न दी गई हो। बच्चे तो बच्चे, बच्चों के माता-पिता भी अगर इन्हें लेकर बैठें तो पढ़ते ही रह जाए।

ये किशोर-उपन्यास नवसाक्षरों तथा अहिन्दी भाषी पाठकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं।

◎

राष्ट्र के नए नागरिकों का निर्माण - यही है हमारा उद्देश्य।

इस उपन्यास में १८५७ की क्रान्ति के प्रसिद्ध योद्धा बिहार-केशरी राजा कुंवर्रासह के शौर्य और रणचातुर्य का रोचक चिश्रण किया गया है।

–◎ किशोर- उपन्यास - माला ◎–

(सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य)

हमारे यहां से प्रकाशित रोचक उपन्यास

वीर रस से परिपूर्ण

भीष्म	कर्ण
श्री कृष्ण	अर्जुन
तांत्या टोपे	जय भवानी
महाबली इन्द्र	चक्रवर्ती दशरथ
बाजीराव पेशवा	वीरांगना चेन्नम्मा
सम्राट शिलादित्य	खूब लङी मर्दानी
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य	चित्तौङगढ़ की रानी
गढ़मण्डल की रानी	महाबली छत्रसाल
गुरु गोविन्दसिद्ध	वीर कुंवर सिंह
सम्राट अशोक	चन्द्रगुप्त मौर्य
हल्दी घाटी	वीर कुणाल
दुर्गादास	उदयन

अन्य महापुरुषों पर आधारित

महाकवि कालिदास		गुदङी का लाल : लालबहादुर
ऋषि का शाप		मदुरा की मीनाक्षी
गुरु नानक देव		देवता हार गए
शान्ति-दूत नेहरू		भाचार्य चाणक्य
मुरु अंगद देव	बापू	विश्वामित्र

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान	वेनिस का सौदागर	हैमलेट
मैकबेथ	राई से पहाङ	आँ थे लो
निराशा	जैसा तुम चाहो	राजा लियर
जूलियस सीजर	भूल पर भूल	रोमियो जूलियट

शिकार एवं ज्ञान-विज्ञान पर आधारित

अलीबाबा और चालीस चोर		दैत्याकार पक्षी का शिकार
मगरमच्छ का शिकार		ह्वेल का शिकार
रूपा और लल्ली	पूपू	हाथी का शिकार
प्ररब के मसखरे	उङनेवाला घोङा	बाघ का शिकार

साहसिक कहानियाँ

रंग बिरंगी परियां

हमारे बहादुर जवान

हमारे बहादुर हवाबाज

विश्व की साहसिक गाथाए

देश-देश की परियां भारत आईं

भारत के साहसी वीरों की गाथाए

साहसी समुद्री वीरों की सच्ची गाथाएं

शिकार की रोमांचकारी सच्ची गाथाएं

साहस रोमांच की सच्ची कहानियां

नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएं

उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट, नई सङक, दिल्ली-६

१

चिनगारी भड़की

दानापुर छावनी के मैदान में अभी-अभी सुबह की परेड हुई थी और सिपाही अपनी बैरकों को वापस लौट रहे थे।

एक सिपाही ने कहा, "मैंने सुना है कि आज प्रातःकाल गोरे अफसर शस्त्रागार गए और वहां से कारतूस की सभी टोपियां उठाकर अपने साथ ले गए।"

कुछ सिपाहियों ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और फिर प्रश्नसूचक दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"हां, मैंने भी सुना है। तब तो यह बात सही है," दूसरे सिपाही ने कहा, "अब लगता है कि कुछ गड़बड़ अवश्य होगी।" "आसार तो ऐसे ही दीख रहे हैं," तीसरे सिपाही ने चिन्तित होकर कहा, "यहां अनेक प्रकार की अफवाहें उड़ रही हैं। हे भगवान ! क्या करने वाले हो ?"

उसने यह बात इस तरह कही कि दो-तीन सिपाही जो चुप- चाप उनके पीछे चल रहे थे, जोर से हंस पड़े। आगे के सिपाही ने नाराज होकर उनकी ओर देखा।

तब पीछे के एक सिपाही ने कहा, "अरे भैया ! घबराते क्यों हो। जब भगवान ही सब कुछ करने वाला है, तो वह सोच-समझकर ही करेगा।"

"लेकिन यहां के हाल तो अच्छे नहीं लगते," उस सिपाही ने जोर से कहा, "मैंने दो-तीन अज्ञात व्यक्तियों को छावनी में घूमते देखा है, कई सिपाहियों को रात में फुसफुसाते देखा है, और तब भी घबराएं नहीं तो क्या करें ?"

"कुछ नहीं, चुपचाप देखते चलो," पीछे के सिपाही ने उत्तर दिया, "जमाना बदल रहा है। जैसी सबके साथ बीतेगी, वैसी ही तुम्हारे साथ भी बीतेगी। उनसे अलग रहोगे तो हो सकता है और भी बुरी बीते।"

"लेकिन.." उस सिपाही ने कुछ कहना चाहा ।

"अरे चुपचाप बढ़ते जाग्रो," तभी पीछे के सिपाही ने टोका, "अफसर लोग देख रहे हैं, शक करेंगे।" सब चुपचाप बैरक की ओर चलने लगे ।

दोपहर हुई। सूर्य का प्रचण्ड ताप असहनीय होने लगा । सिपाहियों ने बैरक में नहा-धोकर खाना खाया और आराम करने चले गए। लेकिन कुछ सिपाही चार-चार, छः-छः की टोली बनाकर फुसफुसाकर बातें करते रहे ।

ठीक दो बजे कमाण्डर का हुक्म आया कि सिपाहियों के पास कारतूस की जितनी टोपियां हों, उन्हें जमा करा दें। सिपाहियों में खलबली मच गई। बिना टोपी के उनकी बन्दूक बेकार थी।

उन दिनों बन्दूक के कारतूस नहीं थे । बन्दूक की नली के अन्दर टोपी रखकर बारूद और गोली भरी जाती थी। घोडा दबाकर लोहे की एक सींक टोपी से टकराती थी, जिससे बारूद फटता था और उसके धक्के से गोली तेज रफ्तार से नली से बाहर निकलती थी। इसलिए बन्दूक चलाने के लिए टोपी श्रावश्यक होती थी । बिना टोपी के बन्दूक नहीं चलाई जा सकती थी ।

"कमाण्डर ने यह हुक्म क्यों दिया ! हमने तो कुछ भी नहीं किया था," कुछ सिपाहियों ने पूछा।

इतने में एक सिपाही मेज पर खड़ा होकर जोर-जोर से कहने लगा, "भाइयो ! हम टोपियां जमा नहीं करेंगे। गोरे अफसर हमें निहत्था बनाकर मार डालना चाहते हैं।"

"क्यों ?" एक सिपाही ने पूछा।

"क्योंकि गोरों को मालूम है कि मेरठ और दिल्ली में सिपाही विद्रोह कर चुके हैं।" मेज पर चढ़े सिपाही ने उत्तर दिया, "उन्हें शक है कि हम भी विद्रोह कर देंगे। इसीलिए वे टोवियां छीन लेना चाहते हैं, जिससे हम बन्दूकें न चला सकें।"

चारों ओर हल्ला मच गया। सभी आपस में जोर-जोर से बहस कहने लगे। कोई कहता, "हमें टोपियां जमा कर देनी चाहिए। यह कमाण्डर का हुक्म है। हुक्म न मानने पर तो हमें अवश्य ही सजा मिलेगी।"

कोई कहता, "हम टोपियां जमा नहीं करेंगे। हमारे अफसर हमसे चाल चल रहे हैं। अगर उन्होंने मेरठ और दिल्ली का बदला हमसे लेना शुरू कर दिया, तो बिना बन्दूक के हम कैसे मुकाबला कर सकेंगे; हमें तो निहत्था ही मर जाना पड़ेगा।"

दानापुर में तीन पल्टनें थीं - ७ नम्बर, ८ नम्बर और ४० नम्बर। तीनों जगह इसी प्रकार की बहसें चल रही थीं, परन्तु नतीजा कुछ भी नहीं निकल पा रहा था।

तभी सबने देखा कि बैरक से बाहर बाग की सड़क से दो तोपें लाकर परेड-मैदान में खड़ी कर दी गईं। तीनों पल्टनों के सिपाही समझ गए कि उन्हें उड़ाने के लिए ही तोपें लाई गई हैं। उनके चेहरे गुस्से से लाल हो गए। कुछ डर भी गए। चारों ओर खलबली मच गई।

इतने में अस्पताल की ओर से 'धांय-धांय' गोलियां छटने

की आवाजें आने लगीं। सिपाहियों में भगदङ मच गई। वे सब अपनी बन्दूकें लेने शस्त्रागार की ओर भागे।

शस्त्रागार के रक्षक हवलदार ने सिपाहियों को आते देखा तो उसने तुरन्त फाटक पर ताला लगा दिया। सिपाहियों का खून खौल उठा। एक ओर उन्हें भूनने के लिए तोपें खडी थीं, और दूसरी ओर शस्त्रागार-रक्षक हवलदार उन्हें अपने हथि- यार तक नहीं लेने दे रहा था। वे सब हवलदार पर झपटे।

"कोट खोल दो !" तभी किसी ने कडकती आवाज में हुक्म दिया। सबने मुडकर देखा, कम्पनी के मेजर और एजुटेण्ड खडे थे। हवलदार ने हुक्म पाकर फाटक खोल दिया।

मेजर ने सिपाहियों से कहा, "देखो, आप लोग अपने हथि- यार लेकर अपनी-अपनी बैरकों में चले जाओ। कहीं कोई गडबड नहीं होनी चाहिए।"

लेकिन उस समय उसकी सुनने की फुरसत किसे थी। सभी एक साथ फाटक के अन्दर लपके और अपनी-अपनी बन्दूकें उठा- कर बाहर आते ही शोर मचाने लगे। कुछ सिपाही डर के मारे सीधे अपनो बैरकों की ओर भागे, लेकिन अधिकांश ने विद्रोह कर दिया और शोर मचाते हुए पश्चिम की ओर चल दिए। और इस प्रकार दानापुर छावनी में २५ जुलाई, १८५७ को विद्रोह की चिनगारी भडककर दावानल बन गई। लेकिन क्या यह सब अचानक हुआ था ?

२

वे अज्ञात व्यक्ति

दानापुर छावनी बिहार के शाहाबाद जिले में थी और बिहार की सबसे बड़ी छावनी मानी जाती थी। इस छावनी के अधिकांश सिपाही विद्रोह करके पश्चिम की ओर बढ़े चले जा रहे थे।

रास्ते में एक सिपाही ने थोड़ा रुककर पीछे-पीछे आने वाले सिपाही के कंधे पर हाथ रखकर पूछा, "क्यों भाई, अब तो तुम्हें डर नहीं लग रहा है?"

उस सिपाही ने कुछ खिसियाकर उत्तर दिया, "भैया, मुझे तो अब भी कुछ पता नहीं है कि क्या होने जा रहा है। मैं तो वही कर रहा हूं जो आप सब कर रहे हैं। आपको कुछ मालूम हो तो हमें भी बता दो।"

यह कहकर उसने पहले वाले सिपाही की ओर देखा। वह सिपाही मुस्कराकर बोला, "तो सुनो, आज २५ जुलाई है न?" "हां," दूसरे सिपाही ने उत्तर दिया।

"बस, आज २५ जुलाई, १८५७ को ही दानापुर में विद्रोह होना था, सो वह हो गया," पहले सिपाही ने मुस्कराकर कहा। "तो क्या यह पहले से ही निश्चित था कि २५ जुलाई को विद्रोह होगा? क्या यह विद्रोह अचानक नहीं हुआ?" दूसरे

सिपाही ने पूछा।

"नहीं, हमारा विद्रोह अचानक नहीं हुआ। यह काफी सोच- समझकर हुआ है," पहले सिपाही ने उत्तर दिया, "आज सुबह तुम कह रहे थे न कि दो अनजान आदमी छावनी में घूमते हैं?"

"हां, कहा तो था।"

"तो बस, वही इस विद्रोह की तैयारी करा रहे थे।"

"लेकिन हमें तो किसी ने नहीं बताया ?"

"सबको बताना खतरे से खाली न था। अंग्रेजों के जासूस भी फैले हुए हैं। अगर उनके पास तक बात पहुंच जाती तो वे इस विद्रोह को कुचल देते," पहले सिपाही ने उत्तर दिया, "उन्हें कुछ-कुछ पता भी लग गया था, इसीलिए उन्होंने टोपियां जमा कराने का हुक्म दिया था।"

"उन्हें पता कैसे चला ?"

"अरे हमारे यहां गद्दारों की कोई कमी है ? हमारे जिले की राजधानी आरा है। वहां जिलाधीश की कचहरी है। उसी कचहरी में १७ जुलाई को किसी गद्दार भाई ने जिलाधीश की मेज पर एक गुमनाम पत्र रख दिया था। उस पत्र में लिखा था कि राजा कुंवरसिंह ने वचन दिया है कि वे विद्रोह में शामिल होंगे। विद्रोह २५ जुलाई को होगा।"

"तब ?"

"तब क्या," पहले सिपाही ने उत्तर दिया, "आारा में राजा कुंवरसिंह की कोठी है। जिलाधीश ने तुरन्त उस कोठी की तलाशी लिवाई और राजा साहब के मुख्तार काशीप्रसाद को गिरफ्तार करा दिया।"

"तब ?"

"तब राजा कुंवरसिंह को इसकी सूचना मिली तो क्रोध

के मारे उनके तन-बदन में आग लग गई। उन्होंने कसम खाई कि वे शाहाबाद जिले से अंग्रेजों को निकालकर ही दम लेंगे। लेकिन वे जानते हैं कि वे अकेले अंग्रेजों की इतनी बडी फौज से मुकावला नहीं कर सकेंगे। इसलिए उन्होंने यहां अपने दो खास आदमी भेजे।"

"क्यों ?"

"जिससे वे छावनी में खास-खास सिपाहियों से मिलें और उन्हें विद्रोह के लिए तैयार करें।"

"ये क्या वही दो आदमी हैं, जो छावनी में घूमते थे ?"

"हां, वही दो।"

"क्या नाम है उनका ?"

"हरेकृष्ण और रणदलन सिंह।"

"वे अब कहां हैं ?"

"वे छावनी से बाहर हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अभी कुछ देर बाद देख लेना," पहले सिपाही ने उत्तर दिया।

दूसरा सिपाही चलते-चलते ही उत्सुकता से आगे की ओर देखने लगा।

सिपाहियों का दल शोर मचाता हुआ चला जा रहा था। सभी में जोश भरा हुआ था और वे जल्दी से जल्दी अंग्रेजों से लडकर शाहाबाद जिले को स्वतन्त्र करने के लिए उत्सुक थे।

छावनी से काफी दूर पहुंचने के बाद सिपाहियों ने देखा कि सामने से दो व्यक्ति उनकी ओर चले आ रहे हैं। उन्हें देखते ही अनेक सिपाहियों ने जोर से नारा लगाया, "राजा कुंवरसिंह की जय !"

उधर से भी दोनों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "राजा कुंवर सिह की जय !"

ये दोनों व्यक्ति थे, हरेकृष्ण और रणदलनसिह। सिपाहियों

के निकट आते ही हरेकृष्ण ने सबको चुप होने का इशारा कर जोर से कहा, "भाइयो यह खुशी की बात है कि आज हमारी योजना पूरी सफल रही। अब हमें अपने जिले शाहाबाद को स्वतन्त्र करना है। इस समय यहां पर हम ४ हजार से कम नहीं हैं। हमारे पास हथियार भी हैं और राजा कुंवर्रासह की दस हजार सिपाहियों की सेना भी हमारे साथ होगी।"

"राजा कुंवरसिंह की जय !" सबने फिर नारा लगाया।

हरेकृष्ण ने आगे कहा, "भाइयो, यह हमारी स्वतन्त्रता का प्रश्न है। हमें अपने प्राणों की बाजी लगा देनी है। हमारे राजा कुंवरसिंह सिद्ध पुरुष हैं। उनके रणकौशल के सामने यहां के थोडे-से अंग्रेज एक भी दिन नहीं टिक सकते। हमारे राजा साहब महीनों से विद्रोही सरदार नाना साहब से पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। नाना साहब चाहते हैं कि यदि देशभर के समस्त सिपाही विद्रोह कर दें तो अंग्रेजों के पास इस विद्रोह को दबाने के लिए कोई भी ताकत नहीं रह जाएगी। तब नाना साहब आसानी से अग्रेजों को भारत से बाहर खदेङ सकेंगे और तब पूरा देश स्वतन्त्र हो जाएगा।"

"तो अब हमें क्या करना है ?" एक सिपाही ने पूछा।

"अब हमें यहां से सोन नदी की ओर बढ़ना है। वहां नदी के तट पर राजा कुंवरसिंह हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे शाहाबाद को स्वतन्त्र कराने की पूरी योजना बना चुके हैं। अब हमें उनकी आज्ञा का पालन करना है।"

उतावले सिपाही जोर-जोर से नारा लगाते हुए हरेकृष्ण और रणदलनसिंह के पीछे-पीछे सोन नदी की ओर चल दिए। वे राजा कुंवरसिंह को देखने के लिए उतावले हो रहे थे। उनमें प्रायः सबने राजा का नाम तो सुना था पर अधिकांश ने उन्हें नहीं देखा था। वे उस जीवट के आदमी को देखने के

लिए उत्सुक थे, जिसने पूरे देश को स्वतन्त्र करने के लिए सिपाहियों में विद्रोह करने का इतना बङा सूत्रपात किया था। वे देखना चाहते थे कि ये राजा कुंवर सिंह कौन हैं, कैसे हैं, उनका व्यक्तित्व कैसा है ?

तो ये राजा कुंवरसिंह कौन थे ?

३

वह भव्य व्यक्ति

शाहाबाद जिले में तीन प्रमुख नगर थे- दानापुर, श्रारा और जगदीशपुर। दानापुर में बिहार की सबसे बङी छावनी थी; आारा में शाहाबाद जिले के जिलाधीश की अदालत, खजाना, जेल और अंग्रेजों की छोटी-सी छावनी थी तथा जगदीशपुर राजा कुंवरसिंह की राजधानी थी। जगदीशपुर एक छोटी-सी जमींदारी थी और उसके जमींदार कुंवरसिंह थे। बाद में अवध के नवाब ने उनकी बहादुरी और ऐश्वर्य को देख-कर उन्हें 'राजा' की पदवी दी थी।

राजा कुंवरसिंह का जन्म सन् १७८२ में हुआ था। उनके पिता का नाम साहबजादासिंह और माता का नाम पंचरत्न कुंवर था। उनके तीन भाई थ - दयालसिह, राजपतिसिंह और अमरसिंह। उनके केवल एक पुत्र था - दलभंजनसिह। दल-भंजनसिंह के एक लङका हुआ। उसका नाम वीरभंजनसिंह रखा गया। दलभंजन युवावस्था में ही चल बसा था और तब उसके लङके वीरभंजन को राजा कुंवरसिंह ने ही पाला भौर शिक्षा दी।

राजा कुंवरसिंह बचपन से ही बङे जोशीले और साहसी थे, लेकिन उनकी पढ़ाई-लिखाई अधिक न हो सकी। फिर भी

वे बहुत कुशाग्रबुद्धि और सौंदर्य-प्रेमी थे। जगदीशपुर की गद्दी पर बैठते ही उन्होंने सबसे पहले पूरे नगर को सजाना-संवारना शुरू कर दिया। उन्होंने नए बाजार बनवाए, तालाब खुदवाए, गढ़ को नए सिरे से बनवाया, उसमें रमणीक बाग लगवाया और हौज बनवाया। उन्होंने एक बहुत बङा शस्त्रागार भी बनवाया और उसमें अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र रखे।

उन्होंने अपनी जमींदारी में अनेक जंगल लगवाए। उन्हें अपनी जमींदारी से लगभग ५-६ लाख रुपए मिलते थे, जिसमें से डेढ़ लाख रुपए से अधिक मालगुजारी में चले जाते थे। वे इतने उदार और दानी थे कि उनका खर्च आमदनी से बढ़ गया था और वे कर्ज में डूब गए थे।

वे इतने जिन्दादिल और स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे कि उन्हें अंग्रेजों का शासन जरा भी नहीं भाता था। फिर पटना कमिश्नरी के कमिश्नर विलियम टेलर ने उनके ऊपर इतने अत्याचार किए कि उन्हें अंग्रेजों से सख्त घृणा हो गई। १८५७ में उनकी उम्र ७५ वर्ष हो गई थी, फिर भी वे जवानों की तरह चुस्त और ताकतवर थे।

पहले भी उन्होंने चुपके-चुपके विद्रोह करना चाहा था, लेकिन अच्छा संगठन न होने से वे सफल न हो सके थे।

अब मेरठ और दिल्ली में सिपाही विद्रोह होने पर राजा कुंवरसिंह बिहार में भी सिपाही विद्रोह कराने को उतावले हो उठे। उन्होंने चारों और प्रबन्ध करना शुरू कर दिया। कुछ गद्दारों ने उनकी सूचना अंग्रेजों को दे दी, जिससे अंग्रेज सतर्क हो गए। उन्होंने राजा कुंवरसिंह के आरा वाले मकान की तलाशी लिवाई और उनके मुख्तार काशीप्रसाद को कैद कर दिया।

इससे राजा कुंवरसिंह बहुत क्रुद्ध हुए। उन्होंने अपने दो

खास आदमी, हरेकृष्ण और रणदलनसिह को पूरी योजना बताकर तत्काल दानापुर छावनी भेजा।

इन्हीं दो आदमियों के प्रयत्न से निश्चित तारीख २५, जुलाई को दानापुर में विद्रोह हुआ।

सोन नदी के किनारे राजा कुवरसिंह अपने कुछ आदमियों के साथ दानापुर से आने वाले सिपाहियों की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने नदी पार करने के लिए सब नावें अपने कब्जे में कर ली थीं।

शाम हो गई थी। विद्रोही सिपाहियों के दल ने जब नदी के तट पर कुछ लोगों को देखा, तो वे राजा कुंवसिंह को जय- जयकार करते हुए तेजी से आगे बढ़े। प्रत्येक सिपाही जल्दी से जल्दी राजा कुंवरसिंह के दर्शन करने को आतुर था।

तट पर जाकर सिपाहियों ने देखा - हृष्ट-पुष्ट मंझोले कद का वृद्ध व्यक्ति, कमल के फूल-सी आंखें, चौडा सीना, कडी- कडी घनी मूछें बरछी की नोक-सी खडी, गठा बदन और रंग गेहुंवा।

तो यही राजा कुंवरसिंह हैं, जिन्होंने अंग्रेजों से लोहा लेकर पूरे देश को स्वतन्त्र कराने का प्रण किया है ?

सभी सिपाही उस भव्य व्यक्तित्व को देखते रह गए। उन्हें पक्का भरोसा हो गया कि उनके सामने खडा यह अनो वा व्यक्ति अवश्य ही उनके देश को स्वतन्त्र कराने में समर्थ है। राजा कु वरसिंह के व्यक्तित्व में कुछ ऐसा ही गुण था कि जो देख लेता, वही श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता।

अब तक वे सभी शान्त खडे थे। सभी सिपाही यह जानने को आतुर थे कि अब राजा साहब उन्हें क्या श्राज्ञा देते हैं।

राजा कुंवरसिंह ने उनके भाव को जानकर अपने धीर- गम्भीर स्वर में बोलना शुरू किया, "साथियो, तुम लोगों ने

CHADDA

अपने देश को स्वतन्त्र करने के लिए यह विद्रोह किया है। इसके लिए मैं तुम सबको बधाई देता हूं। आज हम सब यहीं रहेंगे। रात हो चली है। कल प्रातः हमें आरा की ओर कूच करना है। हमें पहले आरा पर घेरा डालना है; वहां की जेल खोलनी है, खजाना लूटना है और कचहरी पर अपना अधिकार जमाना है। फिर हमलोग जगदीशपुर जाएंगे और पूरे शाहा- बाद को स्वतन्त्र घोषित करेंगे। मेरे आदमी सब जगह पूरा प्रबन्ध कर चुके हैं।"

सिपाहियों ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

राजा कु वरसिंह ने आगे कहा, "जगदीशपुर के गढ़ में मैंने २०,००० आदमियों के लिए ६ महीने तक के खाने का प्रबन्ध कर दिया है। हमारे शस्त्रागार में इतने आदमियों के लिए काफी हथियार भी हैं और पूरे शाहाबाद जिले में हमारे आदमी फैले हुए हैं। हमें सिर्फ कुछ चतुराई से काम करना है और आप लोग विश्वास रखें, हम आज से तीन दिन बाद स्वतन्त्र हो जाएंगे।"

सिपाहियों ने एक बार फिर स्वीकृति में सिर हिलाया और मन ही मन राजा कुंवरसिंह की चतुराई की प्रशंसा करने लगे। लेकिन क्या इन सब बातों से अंग्रेज अनजान थे?

४

आरा का घेरा

दानापुर में विद्रोह होने की खबर पूरे बिहार में जंगल की आग की तरह फैल गई। अंग्रेजों को पहले ही से आशंका थी; अब दानापुर में विद्रोह सुनकर वे घबरा उठे। उन्होंने अपने बचाव के लिए प्रबन्ध करना शुरू कर दिया।

आरा में जिलाधीश ने तुरन्त रेल विभाग की दुमंजिली कोठी में रक्षा का प्रबन्ध किया। महीने भर लायक खाने-पीने का सामान रखा और खुद वहीं चला गया। अन्य अंग्रेज भी भाग-भागकर वहां शरण लेने लगे।

खजाने के नजीबों के अफसर को जब पता लगा कि सभी अंग्रेज रेल-विभाग की कोठी में भागकर चले गए हैं, तो वह सीधे वहीं जिलाधीश से मिलने पहुंचा।

"सरकार, सुना है कि दानापुर में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया है और अब वे सीधे यहां आ रहे हैं।" नजीब-अफसर ने अपनी स्वामिभक्ति जाहिर करते हुए कहा, "अब हमें क्या करना है, सरकार ! जैसा हुक्म होगा, बजाएंगे।"

"देखो, घबराने की बात नहीं है," जिलाधीश ने उत्तर दिया, गो कि वह स्वयं बहुत घबराया हुआ था, "तुम जेल में अपनी जगह लौट जाओ। अगर विद्रोहियों का छोटा दल हो और

वह जेल या खजाने पर हमला करे, तो तुम लोग उसका मुका- बला करना। मैं तुम्हारी मदद के लिए दूसरे सिपाहियों को भेजूंगा। लेकिन अगर विद्रोही बहुत अधिक हुए, तो तुम अपने पहरेदारों को लेकर पीछे हट जाना।"

"जो हुक्म, सरकार !" अफसर ने अपना सिर कुछ झुका- कर कहा, "आप विश्वास करें, हम किसी भी हालत में पीछे नहीं हटेंगे। अपनी जगह पर रहकर जान देंगे, लेकिन शत्रु को आगे नहीं बढ़ने देंगे।"

यह कहकर उसने फिर झुकाकर लम्बा सलाम किया और खजाने की तरफ चल दिया।

जिलाधीश महोदय ने भी सन्तोष की सांस ली और अंदर चले गए।

शाम हुई और फिर रात का अंधेरा बढ़ने लगा। खजाने का नजोब-अफसर अपने कुछ सिपाहियों को लेकर फिर कोठी पर चला आया।

जिलाधीश ने नीचे बरामदे में आकर प्रश्नसूचक दृष्टि से उसी ओर देख।। सबने उसे फौजी सलाम किया।

"सरकार, हम कुछ सिपाही यहीं पहरे पर रहेंगे और बाकी सिपाहियों को मैंने खजान के चारों ओर पहरे पर लगा दिया है। मैंने सुना है कि राजा कुंवरसिंह विद्रोहियों के साथ सोन नदी पार करके आरा के काफी निकट पहुंच चुके हैं और कल सुबह वे यहां हमला कर देंगे। इसलिए मैंने खजाने तथा उस कोठी की रक्षा के लिए यह प्रबन्ध किया है।"

"तुमने बहुत अच्छा किया, मेरे बहादुर जवान !" जिला- धीश ने थोड़ा-सा मुस्कराकर कहा, "तुम सब यहीं रह सकते हो। कान खुले रखना; और हां, तुम्हारे पास हथियार हैं न ?" "जी हां, हम पूरी तरह तैयार होकर आए हैं," नजीब

अफसर ने उत्तर दिया, "हम चौकन्ने रहेंगे और बारी-बारी से पहरा देंगे ।"

"ठीक है, जैसा चाहो कर सकते हो," जिलाधीश ने कहा और अन्दर चला गया।

बह इस बात पर बहुत खुश था कि नजीब-अफसर और उसके सिपाही बिना कहे ही कोठी की रक्षा करने चले आए हैं। पहले वह मन ही मन घबरा रहा था कि कोठी की रक्षा कैसे की जाएगी; सभी अंग्रेज अफसर तो डर के मारे कोठरियों में छिप गए हैं। लेकिन वह किसी भारतीय सिपाही को बुला भी नहीं सकता था। एक तो उसे डर था कि कहीं वे ही सिपाही एन मौके पर विद्रोह न कर दें और दूसरे यदि उन्हें बुलाया जाता है तो वे समझ जाएंगे कि अंग्रेज बहुत डरे हुए हैं। वह नहीं चाहता था कि भारतीय सिपाहियों को पता चले कि वे बहुत घबराए हुए हैं। अब जब नजीब-अफसर कुछ सिपाहियों को लेकर खुद ही चला आया तो जिलाधीश को बेहद खुशी हुई, लेकिन उसने नजीब के सामने यह खुशी प्रकट नहीं की। उसके सामने वह गम्भीर ही बना रहा। अब अन्दर कमरे में लेटे- लेटे वह सोच रहा था कि अगर इन विद्रोहियों से प्राण बच गए और शाहाबाद में शासन कायम रह गया तो इस नजीब- अफसर को अवश्य ही बहुत बङा पुरस्कार दूंगा ।

किसी तरह रात कटी और सुबह हुई। जिलाधीश ने ऊपर छत से देखा कि नजीब-अफसर और उसके सभी सिपाही सरकारी अहाते के अन्दर गश्त लगा रहे हैं। इसी ग्रह। ते में अदालत थी; एक ओर खजाना और कुछ दूरी पर जेल थी । जिलाधीश खुश था कि उसकी कोठी, जेल, अदालत और खजाने की रक्षा के लिए कुछ विश्वसनीय सिपाही हैं।

लगभग ९ बजे थे कि बाहर से राजा कुंवरसिंह और उनके

सिपाहियों ने हमला बोल दिया।

कोठी के अन्दर अग्रेजों ने खिडकियों और दीवालों की आड लेकर मोर्चा बांध लिया। उन्होंने बन्दूकें भरकर उनकी नोकें अहाते की ओर कर दीं, ताकि यदि विद्रोही कोठी में घुसने का प्रयत्न करें तो उन्हें बाहर आंगन में ही रोका जा सके।

जिलाधीश अपनी बन्दूक लेकर छत पर पहुंच गया। उसने वहां से जो कुछ देखा, उससे उसकी आंखें फटी की फटी रह गई। उसने देखा कि नजीब-अफसर और उनके सिपाही दौडकर राजा कुंवरसिंह के पास पहुंच गए हैं और उन्हें खजाने का रास्ता दिखा रहे हैं। जिलाधीश समझ गया कि नजीब-अफ- सर ने उसे धोखा दिया। पर अब क्या हो सकता था। कोठी में छिपे अंग्रेज थरथर कांप रहे थे।

खजाना लूटने के बाद सिपाहियों ने जेल के ताले तोड डाले और अन्दर के कंदी राजा कुंवरसिंह की जय के नारे लगाते हुए बाहर निकलकर कोठी की ओर झपटे। अंग्रेजों ने अन्दर से ही गोलियां छोडनी शुरू कर दीं।

बाहर के सिपाहियों ने भी तुरन्त आड ले ली। नजोब- अफसर और उसके सिपाही पेडों पर चढ़ गए और तक तककर अंग्रेजों पर गोलियां छोडने लगे। उस बीच राजा कुंवरसिंह के सिपाहियों ने आरा पर घेरा डाल दिया।

लेकिन वे क्या आसानी से आरा पर कब्जा जमा सके ?

गांगी विजय

आरा पर घेरा पडने से कोठी में छिपे अंग्रेज आङ लेकर गोलियां चलाते रहे और विद्रोहियों को अन्दर आने से रोकते रहे। लेकिन विद्रोही भी तक-तककर गोलियां छोङते रहे, जिससे अनेक अंग्रेज वहीं धराशायी हो गए।

जिलाधीश कभी छत पर जाकर विद्रोहियों को देखता और कभी नीचे आकर अपने साथियों को ढाढ़स बंधाता।

इसी तरह एक दिन और बीत गया और आरा के चारों ओर राजा कुवरसिंह के अनुयायियों का घेरा पङा रहा।

दिन में अहाते के बाहर से एक विद्रोही सिपाही दौङता हुआ हरेकृष्ण के पास पहुंचा और उसके कान में कुछ बोला। हरेकृष्ण उस सिपाही की बात सुनकर फौरन राजा कुवरसिंह के पास पहुंचा।

"क्या बात है ?" कुंवरसिंह ने पूछा।

"सैनिकों का एक दस्ता दानापुर की ओर से आ रहा है। उसमें अधिकतर अंग्रेज हैं। वे यहां अंग्रेजों की मदद के लिए आ रहे हैं; हमारे जासूस ने बताया है।" हरेकृष्ण ने उत्तर दिया।

"कोई बात नहीं," कुंवरसिंह ने कहा, "तुम एक टुकङी

लेकर पिछले दरवाजे से बाहर निकल जाओ और वहीं छिपे रहना। मैं रणदलनसिंह और नजीब-अफसर को यहां का भार सौंपकर आता हूं। अंग्रेज फौज को तत्काल रोकना है। यहां के अंग्रेजों को पता भी नहीं चलना चाहिए कि उनकी मदद के लिए कोई आ रहा है।"

"जैसी आज्ञा," कहकर हरेकृष्ण तेजी से एक ओर चला गया। कुंवर सिंह हाथ-पैर के बल झुककर आङ लेते हुए नजीब- अफसर के पास पहुंचकर बोले, "देखो, तुम अपने नजीबों के साथ कोठी पर बराबर नजर रखना। कोठी से एक भी आदमी बाहर न निकलने पाए और न भीतर घुसने पाए। दानापुर से अंग्रेजी फौज आ रही है। हरेकृष्ण और हम उसका मुकाबला करेंगे। तुम और रणदलन सिंह यहां डटे रहना।"

यह आदेश देकर राजा कुंवरसिंह रणदलनसिंह के पास पहुंचे और उसे भी समझाकर फौरन अहाते के बाहर चल दिए।

बाहर हरेकृष्ण और लगभग तीन सौ सिपाही राजा कुंवर- सिंह की प्रतीक्षा में खङे थे। उनके आते ही सब दानापुर की श्रोर रवाना हो गए।

अभी वे गांगी के पास पहुंचे ही थे कि उन्हें दानापुर की ओर से अंग्रेजों की फौज आती दिखाई दी। राजा कुंवरसिंह ने अपनी सेना को तुरन्त एक खास इशारा किया। सब सिपाही क्षण भर में तितर-बितर हो गए। रास्ता बिल्कुल खाली हो गया।

अंग्रेज फौज चार-चार की पंक्ति बनाकर तेजी से मार्च करती हुई आरा की ओर बढ़ती जा रही थी। रास्ता साफ था; कहीं कोई खतरा न था। अंग्रेजी फौज जल्दी से जल्दी आरा पहुंचकर वहां कोठी में फंसे अपने भाइयों को छुङाने के लिए आतुर थी।

अभी यह फौज गांगी के निकट पहुंची थी कि लगभग दो सौ सिपाहियों ने शोर मचाते हुए उन पर हमला कर दिया। अंग्रेज जब तक अपनी बन्दूकें सभालें, तब तक दूसरी ओर से लगभग एक सौ सिपाही उन पर टूट पडे। फौज में खलबली मच गई। कुछ आगे की ओर भागे और कुछ पीछे की ओर।

लेकिन आगे तो कुंवर सिंह अपने सिपाहियों के साथ पहले ही से खडे थे। अंग्रेज पीछे भागे तो रणदलनसिह के सिपाहियों से पाला पड गया।

सारी फौज घिर गई। राजा कुंवरसिंह को उन पर विजय पाने में अधिक समय न लगा। केवल ४०-४५ अंग्रेज किसी तरह बचकर भाग निकले। बाकी सब वहीं मारे गए या घायल हो गए।

जो थोडे घायल थे, वे भागने का प्रयत्न कर रहे थे। कुंवरसिंह के सिपाहियों में इतना जोश भर आया था कि वे उन्हीं घायलों पर टूट पडे।

"खबरदार !" तभी राजा कुंवरसिंह ने अपनी कडकती आवाज से उन्हें टोका, "घायलों को कोई न मारे। जो पकड लिए गए हैं, उन्हें भी सम्मान के साथ जेल में रखा जाए।"
कुंवरसिंह की आज्ञा सुनकर सिपाहियों के बढ़ते हाथ ठिठक गए। उन्होंने अपनी तलवारें नीची कर लीं।

कुंवनिह मृत अंग्रेज संनिकों की ओर बढ़े। उनके साथ उनके विश्वसनीय सेनापति हरेकृष्ण और रणदलनसिंह थे। कुंत्ररसिह आगे बढ़ते हुए एक मृत अंग्रेज के पास पहुंचे, जो अफसर लग रहा था।

उन्होंने हरेकृष्ण से पूछा, "यह कौन था ?"

"कैप्टन डनबर," हरेकृष्ण ने उत्तर दिया, यही इस फौज का सेनापति था।"

"ठीक है," कुंवरसिंह ने कहा, "हम आरा पर विजय पा चुके हैं। यहां दो थाने रहेंगे - एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी । पूर्वी थाने के कोतवाल तुराव अली और पश्चिमी थाने के कोतवाल खादिम अली होंगे। गुलाम यहिया यहां को जिला- धीश रहें और उन्हें ही आरा का शासन चलाना होगा । हम अब जगदीशपुर जाएंगे और पूरे शाहाबाद के अंग्रेजों के शासन से स्वतन्त्र होने तथा अपने को उसका शासक होने की घोषणा करेंगे ।"

लेकिन क्या वे यह घोषणा कर पाए ?

६

छापामार युद्ध

"तो तुम कैसे भाग आए ?" मेजर आयर ने अपने सामने खडे घायल अंग्रेज सैनिक से पूछा।

"मेरे बाएं हाथ पर घाव लगते ही मैं इस तरह गिर पडा कि सबने समझा मैं मर गया हूं। छोडकर दूसरे अंग्रेज सैनिकों से उनकी आंख बचाकर एक पेड की मौका पाकर भागा। विद्रोही सिपाही मुझे यों ही लडते रहे और इसी बीच मैं आड में हो गया और फिर

"हूं," मेजर आयर ने एक बार उसकी ओर देखा और फिर गम्भीर चिन्ता में डूब गया।

"जंगल में कुछ घोडे चर रहे थे," अंग्रेज सैनिक आगे बोला, "मैंने अपने कमर की पेटी एक घोडे की गर्दन में बांधी और कूदकर उस पर चढ़ गया। घोडा चराने वाला शोर मचाता हुआ मेरे पीछे भागा, लेकिन उससे पहले ही मैंने घोडे को जोर से एड लगाई और वह तीर की तरह तेजी से भागने लगा। मैंने अपनी बांहों से कसकर उसकी गर्दन पकड लो, जिससे मैं गिर न पडूं। और इस तरह जान बचाकर यहां तक पहुंच गया।"

"तो तुम भगोडे हो ?"

"नहीं, सरकार, वहां मौका ही ऐसा था। मैं सीधे पटना जा रहा था, जिससे वहां के कमिश्नर को पूरा हाल सुनाऊं और उनसे बङी फौज आरा भिजवाऊं। अगर वहां जल्दी से जल्दी मदद नहीं पहुंचेगी, तो आरा में एक भी अंग्रेज नहीं बचेगा।"

"हूं... विद्रोही कितने हैं ?" मेजर आयर ने पूछा।

"करीब दस हजार।"

"क्या-क्या हथियार हैं उनके पास ?"

"बन्दूकें हैं, पर बहुत कम। ज्यादातर तलवार से लङते हैं।"

"गोला-बारूद, तोप ?"

"कुछ नहीं।"

"ठीक है," मेजर आयर ने कहा, "हम चलेंगे, हमें रास्ता दिखाओ।"

"आप ?" सैनिक ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, हम चलेंगे। हमारे पास पूरा तोपखाना है. दो पलटनें हैं, हरेक सैनिक के पास एनफील्ड राइफल है। हम देखेंगे राजा कुंवरसिंह कितना मुकाबला कर सकता है," मेजर आयर बोला।

"लेकिन आप तो..."

"नहीं," मेजर आयर ने बीच में ही टोका, "अभी हम इलाहाबाद नहीं जाएंगे। पहले कुंवरसिंह से निबट लें, तब देखा जाएगा।"

"जैसा आप ठीक समझें," सैनिक ने कहा, "जितनी जल्दी मदद पहुंचेगी, उतनी जल्दो हमारे अग्रज भाई मुक्त होंगे।"

मेजर आयर ने फौरन अपनी सेना को आरा की ओर कूच करने का हुक्म दिया।

बात यह थी कि मेजर आयर अपनी दो पलटनें और तोपखाना लेकर कलकत्ता से गंगा नदी के रास्ते स्टीमर द्वारा

इलाहाबाद जा रहा था। बक्सर में उसने पङाव डाला। वहीं उसे इस घायल सिपाही से पता चला कि आरा के निकट सैकङों अग्रज मारे गए हैं और आरा पर राजा कुंवरसिंह घेरा डाले हुए हैं। मेजर आयर यह सुनकर तत्काल आरा जाने के लिए तैयार हो गया। उसने तुरन्त अपनी सेना को मय तोपखाने के आरा कूच करने का हुक्म दिया।

लेकिन राजा कुंवरसिंह के जासूस उससे भी अधिक चतुर थे। इधर मेजर आयर गजराजगंज तक पहुंच ही पाया था कि उधर राजा कुवरसिंह को खबर मिल गई।

"लगता है, इस बार घमासान युद्ध होगा।" हरेकृष्ण बोले।

"हां, युद्धतो करना ही पङेगा, राजा साहब ने उत्तर दिया, "हम इतनी जल्दी युद्ध करने के लिए तैयार न थे। हम सोचते थे कि जगदीशपुर में पूरी सेना संगठित कर लें तब आगे बढ़ें।"

"तो फिर आज ही जगदीशपुर कूच किया जा सकता है" रणदलनसिंह ने सुझाव दिया, "जब तक मेजर आयर यहां पहुंचे, तब तक हम जगदीशपुर में पूरी तैयारी कर सकते हैं।"

"नहीं," कुंवरसिंह ने कुछ सोचते हुए कहा, हमारे पास नए सिपाही हैं। पहले ही मौके पर यहां से भागने से उनमें कायरता पैदा हो जाएगी- युद्ध जरूरी है।"

यह कहकर राजा कु वरसिंह विचारों में डूब गए। कुछ देर बाद उनकी कमल-सी बङी-बङी आंखें चमक उठीं। उन्होंने खुश होकर बाएं हाथ से चुटकी बजाते हुए कहा, "सुनो हरेकृष्ण ! एक टुकङी को लेकर रातोंरात गजराजगंज चले जाओ और मेजर आयर से लङते-लङते वापस बोबीगंज लौट आश्रो। तब तक हम यहां तैयारी कर लेंगे। जाओ, देर मत करो। अब अधिक समय नहीं है।"

पहली अगस्त की सारी रात हरेकृष्ण की सैनिक टुकङी गजराजगंज के निकट पहुंचकर आराम करती रही। सुबह होते ही उसने मेजर आयर पर हमला कर दिया।

इस अचानक हमले से मेजर आयर चौंक उठा। छापामार युद्ध करते-करते वे सिपाही मेजर आयर की सेना को बीबीगज तक ले आए।

राजा कुंवरसिह ने पहले ही अपनी पूरी सेना पुल के पा भेज दी थी। वे केवल कुछ सिपाहियों को लेकर पुल के इ पार हरेकृष्ण की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेजर आयर और हरे कृष्ण के सिपाही लङते-लङते जैसे ही पुल के निकट पहुंचे कुंवरसिह अपने सिपाही लेकर मोर्चे पर आ गए और हरेकृष् के थके सिपाहियों को पुल पार करने का इशारा कर दिया।

उनके पुल पार करते ही कुवरसिंह भी अपने सिपाहिय के साथ पुल पर चढ़ गए। धीरे-धीरे सब पुल के पार पहुं गए और मेजर आयर के कुछ सैनिक भी पुल पर चढ़ गए। त जैसा कि पहले ही से प्रबन्ध था, तुरन्त पुल तोङ दिया गया पुल पर चढ़े अंगेज सैनिक वहीं से नीचे नदी में गिर पङे औ बाकी पुल के उस पार ही रह गए। मेजर आयर हाथ मल रह गया।

लेकिन इससे क्या मेजर आयर ने हार मान ली ?

७

घना जंगल, वार और पैतरा

मेजर आयर कुछ देर तक होंठ भींचे मुट्ठियां कसे हुए खङा- खङा टूटे पुल को देखता रहा। उसका तोपखाना अभी नहीं पहुंच पाया था । जितनी तेजी से वह हरेकृष्ण के सिपाहियों का पीछा करते हुए आया था, उतनी तेजी से भारी-भारी तोपें लाई नहीं जा सकती थीं ।

फिर भी उसे नदी पार करने का कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही था । वरना उसका इतनी दूर आना बेकार हो जाता। वह चारों ओर नजर दौङाने लगा ।

इतने में उसे सफेद मोटी-सो पगङी पहने एक आदमी जाता दिखाई दिया । मेजर आयर ने अपने सहायक से कहा, "देखो, उस आदमी को फौरन यहां लाओ । अगर सीधे न आए तो संगीन दिखाकर लाओ। जान से मत मार डालना, समझे ?" थोङी देर में वह आदमी मेजर आयर के सामने पेश कर दिया गया।

"वेल । तुम कहां जाता था ?" मेजर ने पूछा।

वह आदमी डर के मारे थर-थर कांप रहा था। उसने हाथ जोङ दिए, पर मुंह से कुछ भी न बोल पाया ।

मेजर आयर ने उसके माथे पर पसीना आते और घुटने

थरथराते देखा तो सीधे उसके पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रख दिया और अपनी आवाज को अधिक से अधिक मुलायम बनाकर बोला, "देखो, हम तुम्हारा दुश्मन नहीं है। हमें नदी पार करना है। अगर तुम हमें रास्ता बता दोगे तो हम तुम्हें बहुत इनाम देगा।"

"हुजूर, मैं बहुत गरीब ठेकेदार हूं, आप ही माई-बाप का नमक खाता हूं," उस आदमी ने गिङगिङाकर कहा, "मुझे इनाम नहीं चाहिए। बस, मेरी जान बख्शी जाए। मैं आपको रास्ता बता देता हूं। आप सीधे इस रेल लाइन के साथ-साथ चले जाएं। श्रागे रेल का पुल है। उसी से आप नदी पार कर सकते हैं।"

"शाबाश !" मेजर आयर ने उसके कन्धे पर हाथ मारकर कहा, "हम तुमसे बहुत खुश हुए। तुम जा सकता है।"

ठेकेदार ने हाथ जोङे और उसी तरह थोङी दूर तक उल्टे पांव चला। मेजर आयर ने अपनी सेना को फौरन रेल लाइन के साथ चलने का आदेश दिया और स्वयं भी तेजी से उस ओर चल दिया। उसकी पीठ जब ठेकेदार की ओर हो गई, तब ठेकेदार ने एक हाथ में पगङी और दूसरे हाथ में धोती थामकर उल्टी दिशा में ऐसी दौङ लगा दी, मानो कोई शेर उसका पीछा कर रहा हो।

रेल-पुल के पार घना जंगल था। मेजर आयर का अनु- मान था कि राजा कुवरसिंह इसी जंगल में से होकर गया होगा। अतः उसने अपनी सेना और तोपखाना लेकर पुल पार किया और जंगल में घुस पङा। उसे आशा थी कि कुवरसिंह के सिपाही जंगल पार कर गए होंगे और उन्हें पकङने तथा उनसे लङने के लिए यह जंखल पार करना होगा।

लेकिन जैसे ही उसकी पूरी सेना और तोपखाना जंगल के

अन्दर पहुंचे, वैसे ही पेङ पर चढ़े सिपाही धङाधङ तोपों और सैनिकों के ऊपर कूद पङे। तोपची डर के मारे भाग खङे हुए। कुंवरसिंह के सिपाहियों ने तोपों पर कब्जा जमा लिया, लेकिन उनमें से किसी को भी तोप चलानी नहीं आती थी। अतः तोपें बेकार रहीं।

मेजर आयर ने देखा कि तोपें लुट गईं और शत्रु सिपाही इतने निकट आ गए कि बन्दूकें न तो भरी जा सकती हैं और न दागी ही जा सकती हैं। अतः उसने फौरन बन्दूकों पर संगीनें चढ़ाकर हमला करने का हुक्म दिया।

घमासान युद्ध होने लगा - एक ओर कु वरसिंह के सिपाही तलवार लिए और दूसरी ओर मेजर आयर के सैनिक बन्दूकों पर संगीनें चढ़ाए हुए। संगीनों की लम्बो मार के सामने तल- वारें बेकार हो रही थीं। कुंवरसिंह ने देखा कि उनके सिपाही संगीनों के सामने टिक नहीं पा रहे हैं, उन्होंने तुरन्त एक खास इशारा किया, जिससे उनके सिपाही खूब परिचित थे।

क्षणभर में कुवरसिंह के सिपाही गायब हो गए। मैदान में एक भी सिपाही नहीं दिखाई दिया। मेजर आयर कभी इधर और कभी उधर देखता रह गया।

एकाएक उसने एक ओर उंगली करके जोर से कहा, "भागो, पकङो !"

दो-तीन अंग्रेज सैनिकों ने उधर देखा। कुवरसिंह अपने अंगरक्षकों के साथ भागे चले जा रहे थे।

तीन अंग्रेज उनका पीछा करने लिए उसी ओर झपटे। कुंवरसिंह के साथ उनके चचेरे भाई तुलसीप्रसादसिंह और उसका लङका नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह था। यही दो उनके अंग-रक्षक थे। अंग्रेज काफी निकट पहुंच गए।

एक अंग्रेज ने आगे बढ़कर एक हाथ से बन्दूक उठाकर

भाले की तरह जोर से कुवरसिंह की पीठ पर मारी। तभी तुलसीप्रसाद ने झटके के साथ कुवरसिंह को एक थ्रोर धक्का दिया और पैंतरा बदलकर उस अंग्रेज पर तलवार का वार किया। कुवरसिंह बच गए, पर अंग्रेज वहीं चित हो गया।

इतने में दूसरे अंग्रेज ने तुलसीप्रसाद पर पिस्तौल दाग दी, जिससे उसका माथा फट गया और वह भी वहीं पर गिरकर मर गया। तुलसीप्रसाद को मारकर वह अंग्रेज संगीन लेकर कुंवरसिंह की ओर लपका। तभी नर्मदेश्वर ने पीछे से तलवार जमा दी और वह अंग्रेज वहीं गिर पडा।

उसे गिरता देख तीसरा अंग्रेज नर्मदेश्वर की और लपका। उसे लपकते देख कुवरसिंह ने कमर से कटार निकाली और उस अंग्रज की ओर जोर से फेंकी। कटार का निशाना इतना अचूक बैठा कि वह अंग्रेज वहीं धराशायी हो गया।

"बेटा, नर्मदेश्वर," कुंवरसिंह ने भरे गले से कहा, "आज तुमने अपने दूध की लाज रख ली। मैं तुमको अपनी रियासत के १६ गांव पुरस्कार में दे देता हूं। तुम्हारी पत्नी धर्म राज-कुवर को भी साढ़े ग्यारह सौ बीघे जमीन दी जाएगी।" नर्मदेश्वर ने कृतज्ञतावश अपना सिर झुका लिया।

और राजा कुंवरसिंह क्या उनकी रियासत सही सलामत रह पाई ?

८

पेडों पर लटकती लाशें

राजा कुंवरसिंह के सिपाहियों को जंगल में खदेड़कर मेजर आयर अपनी सेना सहित सीधे आरा पहुंचा। वहां कोठी में अंग्रेजों की दुर्दशा देखकर उसका खून खौल उठा।

"मैं इस सारे शहर को बरबाद कर दूंगा। कु वरसिंह और उसके मददगारों को मिट्टी में मिला दूंगा," मेजर ने क्रोध से मुट्ठियां भींचकर जिलाधीश से कहा।

"इस शहर में रहना हमारा असम्भव हो गया है," जिला- धीश ने उसके क्रोध को और अधिक भड़काने के लिए कहा, "लोग हमें डरपोक समझते हैं, लेकिन हम क्या करते? हमारे पासन तो इतने आदमी थे और न गोला-बारूद कि हम कुवर- सिंह के हजारों सिपाहियों का मुकाबला करते। यहां उन्होंने अंग्रेजों का जो अपमान किया है, उसका बदला लिया ही जाना चाहिए।"

"हां, मैं बदला लूंगा," मेजर आयर ने क्रोध से दांत पीसते हुए कहा, "आप हमें बताइए कि किस-किस ने कुंवरसिंह का साथ दिया, हम उन्हें मारकर पेडों पर लटका देंगे, जिससे सब जान लें कि हमसे लड़ाई ठानने का क्या नतीजा होता है। फिर आगे से कोई विद्रोह करने की हिम्मत नहीं करेगा।

"मैं किस-किस का नाम लें," जिलाधीश ने उत्तर दिया, "यहां तो सभी हमारे दुश्मन हैं।" खजाने के नजीबों ने हमें मदद देने का वचन दिया था; मौके पर वे भी दगा दे गए।" "तो ठीक है," मेजर आयर ने बीच में ही टोककर कहा, "आप देखते रहिए, एक ही दिन में मैं क्या करता हूं।"

और क्रोध से पागल उस मेजर आयर ने सचमुच ४८ घण्टे के अन्दर पूरे आरा शहर को तहस-नहस कर दिया। वहां के निवासियों से सब हथियार जमा करवा लिए। उसने राजा कुंवरसिंह का बनवाया शिवमन्दिर तोड डाला, आस-पास के गांवों को लूट लिया, घायल सिपाहियों को पकड-पकडकर पेडों पर लटका दिया।

फिर उसने फौजी अदालत बिठाने का स्वांग रचा। स्वयं उसका अध्यक्ष बना। जिला मजिस्ट्रेट को जज बनाया और अपने दो कैप्टनों को सदस्य। उस इलाके के एक-एक हिन्दु-स्तानी अफसर को अदालत में पेश किया गया, मुकदमा चलाया गया और एक-एक करके सबको फांसी की सजा दे दी गई।

चारों ओर हाहाकार मच गया। आरा और उसके आस- पास जितने भी पेड थे, सब पर भारतीयों की लाशें लटकती दिखाई देने लगीं। लोगों के दिलों में इतना भय बैठ गया कि अनेक अपने घर के अन्दर ही भूखे-प्यासे छिपे-छिपे मर गए, लेकिन बाहर नहीं निकले।

पूरे एक सप्ताह तक आरा में खून की नदियां बहाकर, मकानों-मन्दिरों को नष्ट कर और लोगों को पेडों पर लटका- कर मेजर श्रायर जगदीशपुर रवाना हुआ।

१२ अगस्त, १८५७ का वह भयावह दिन ! राजा कुंवर- सिंह की सेना जगदीशपुर से कुछ दूर दुलौर गांव में मेजर आयर की आती हुई सेना से भिड गई। घमासान युद्ध हो रहा

था । हरेकृष्ण और रणदलनसिंह तो थे ही, राजा कुंवरसिह के छोटे भाई अमरसिंह भी सहायता के लिए आ गए थे। लेकिन इधर डुमरांव के राजा और उसके सैनिक अंग्रेजों से मिल गए थे। मेजर आयर जी-जान से लङ रहा था। कभी लगता कि वह जीत जाएगा और कभी लगता कि राजा कुंवर सिंह उसे जीवित नहीं छोडेगे ।

लेकिन घण्टे भर में ही युद्ध का फैसला हो गया। मेजर आयर ने धूमधाम से जगदीशपुर में प्रवेश किया। रात को उसने पत्र में लिखा :

"मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि आज मेरी सेना ने कुंवरसिंह की समस्त विद्रोही सेना को पूरी तरह पछाङ दिया । अनुमान है कि दुश्मन ने ३,००० सिपाही जमा किए थे, उनमें लगभग १,५०० विद्रोही सिपाही थे। ११ बजे दिन में दुलौर में मुठभेङ शुरू हुई। दुश्मन ने गढ़बन्दी की हुई थी । उसके सिपाही घण्टे भर तक जी-जान से लङते रहे। उसके बाद वे जगदोशपुर से डेढ़ मील दूर घने और भयानक जंगल में भाग गए । हम दुश्मन को खदेङते हुए वहां तक पहुंचे । अन्त में लगभग एक बजे विजयी होकर जगदीशपुर पहुंचे । हमने कुंवरसिंह के घर पर कब्जा कर लिया, जहां काफी सामान मिला । दो तोपें भी हाथ लगीं।"

इसके बाद मेजर आयर ने जो कुछ किया, वह भी उसने १४ अगस्त को जिलाधीश को लिखकर बताया :

"मैं नगर को बरबाद कर रहा हूं। महल और उसके आस- पास की सभी प्रमुख इमारतों को उङा देने की तैयारी कर चुका हूं। आज मैंने नए हिन्दू मन्दिर को कुछ गिराया, जिसे बनवाने में कुंवरसिंह ने काफी धन खर्च किया था। कैप्टन ला इस्ट्रांजे ने भी लिखा है कि उसने कुंवरसिंह का जितौरा का नया किला

नष्ट कर दिया है और वापस लौटते समय उसके भाई अमर सिह तथा दयालसिंह के मकानों में आग लगा दी है।"

इधर जगदीशपुर की दुर्दशा हो रही थी और उधर...? राजा कुंवरसिंह पर क्या बीती ?

९

पराजय, ईर्ष्या, फूट

"यह पहला मौका है, जब हमें पराजय का मुंह देखना पडा," कुंवरसिंह ने चिन्तित होकर अपने सेनापतियों से कहा, "हमारी युद्ध-संरचना में कहीं कोई गलती अवश्य हो रही है।" "गलती तो हुई ही है, महाराज ! " हरेकृष्ण ने व्यंग्य से कहा, "आपके भाई तो केवल अपनी ही बहादुरी दिखाते रह गए। सिपाहियों का नेतृत्व तक करना भूल गए..."

"तो तुम्हीं ने कौन-सा तीर मारा," अमरसिंह ने क्रोध से गरजते हुए हरेकृष्ण से कहा, "एक ओर खडे तमाशा देखते रहे। यह नहीं हुआ कि अपने सिपाहियों को लेकर बाईं ओर से आने वाली फौज पर टूट पडते।"

"मैं सही ढंग से लड रहा था। मैं नहीं चाहता था कि मेरे सिपाही बेकार कटें। अगर आप दाहिनी ओर से दुश्मन को घेरते तो वे हम दोनों के सिपाहियों के बीच चक्की के पाटों के बीच अनाज की तरह पिस सकते थे," हरेकृष्ण ने जोर से कहा। "हां-हां, अब तो सारा दोष मुझे ही दोगे," अमरसिंह ने उत्तेजित होकर कहा, "लडना आता नहीं और दोष मुझे दे रहे हो। क्यों नहीं कहते कि मेरे आने से तुम्हें ईर्ष्या हुई है।" "मुझे क्यों ईर्ष्या होगी ?"

"इसलिए कि अब तक तुम ही भाई साहब के दाहिने हाथ थे। मेरे आने से तुम्हें लगा कि तुम्हारा पद छिन जाएगा," अमरसिंह ने उत्तर दिया।

"मेरा पद कौन छीन सकता है ?" हरेकृष्ण ने क्रोध से फुफकारकर कहा, "आप यह क्यों नहीं कहते कि आप अपने को मुझसे अधिक योद्धा सिद्ध करना चाहते थे।"

"मुझमें जितनी शक्ति है, उससे मैं लङा। कायर की तरह एक ओर खङा नहीं रहा।"

"आप अपने सिपाहियों को छोङकर सीध डुमरांव के महाराज की ओर बढ़े थे न ?"

"हां, उसने हमसे गद्दारी की थी। वह अंग्रेजों से मिल गया था।"

"यह क्यों नहीं कहते कि उससे आपकी पुरानी शत्रुता थी और उस समय आप सब कुछ भूलकर केवल उससे बदला लेना चाहते थे। बदला लेने का इससे अच्छा मौका फिर कभी नहीं आ सकता था," हरेकृष्ण ने अपनी आवाज को और अधिक तीखा बनाकर कहा।

राजा कुंवरसिह अब तक चुपथे, पर अब बात अधिक बढ़ती देख उन्होंने हरेकृष्ण को टोका, "हरेकृष्ण, यह समय लङने का नहीं, यह देखने का है कि हमें अब आगे क्या करना होगा ?"

हरेकृष्ण चुप हो गया। बात सही थी। दुलौर में बुरी तरह हारकर अब ये लोग सहसराम के जंगल में पङे हुए थे। सिपाहियों का जोश ठण्डा होता चला जा रहा था और उनमें भय समा रहा था। इस समय यह आवश्यक था कि वे सब मिलकर भविष्य की योजना बनाएं और अपने सिपाहियों का हौसला बढ़ाएं।

लेकिन अमरसिंह और हरेकृष्ण का श्रापस में मनमुटाव हो

गया था। अमरसिह अपने को राजा कु वरसिह का छोटा भाई होने के नाते प्रमुख सेनापति मानने लगा था। उधर हरेकृष्ण शुरू से ही राजा कुंबरसिह के साथ रहा और उसी ने दानापुर में विद्रोह का श्रीगणेश करवाया था, इसलिए वह प्रधान सेनापति बनने को अपना हक समझता था। इसी कारण दोनों एक-दूसरे से ईर्ष्या करने लगे थे।

उधर राजा कुंवरसिंह चाहते थे कि अंग्रेजों के विरुद्ध इस स्वातन्त्र्य युद्ध में ये दोनों वीर उनके दाएं और बाएं हाथ बनकर रहें। इसलिए उन्होंने दोनों को समझाया, "देखो, हमारे सामने बहुत बडा मसला है। हमें अपने देश को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतन्त्र करना है। हमें इस तरह आपस में लडना शोभा नहीं देता।"

"लेकिन लडता तो यह हरेकृष्ण है," अमरसिंह ने तमक- कर कहा, "आप इसे समझाइए। इसे अपनी जबान पर काबू रखना चाहिए।"

"मैं अपनी जबान पर काबू रखता हूं और दिमाग पर भी," हरेकृष्ण ने अमरसिंह की ओर आंखें तरेरकर कहा, "अच्छा हो, आप अपनी जबान संभालकर रखें।"

अमरसिंह का गुस्सा फूट पडा। वह म्यान से तलवार निकालकर खडा हो गया और हरेकृष्ण को ललकारकर बोला, "हरेकृष्ण, मैंने अब तक किसी की बात नहीं सुनी। हिम्मत हो तो मैदान में आ जाओ। अभी फैसला हो जाता है। या तो तुम रहोगे या मैं।"

लेकिन हरेकृष्ण के खडे होने से पहले ही राजा कु वरसिंह ने लपककर अमरसिंह की कलाई पकड ली और गुर्राकर बोले, "अमरसिंह, मैं अपनी सेना में फूट नहीं चाहता कि तुम्हारी हरकतें देखकर अन्य सेनापति भी मेरे सामने इस तरह गुस्ताखी

करें। तुम जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ रहे हो। मैं ऐसे अनु- शासनहीन सैनिकों को अपनी सेना में नहीं रखना नहीं चाहता।"

"आपने इसे बहुत मुंह लगा रखा है," अमरसिंह ने अपनी कलाई छुङाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "तभी तो आपको यह दिन भी देखना पङा है।"

"यह दिन अपने सैनिकों के कारण नहीं देखना पङा। युद्ध में हार और जीत लगी रहती है, श्रम सिंह !" कुंवरसिंह ने उत्तर दिया, "और फिर तुमने भी तो केवल व्यक्गित वीरता ही दिखाई, सैन्य-संचालन कहां किया ?"

"मैंने हरेकृष्ण से अधिक अच्छा सैन्य-संचालन किया है।" "नहीं, तुमने केवल डुमरांव के राजा से बदला लिया। युद्ध-संचालन की ओर ध्यान नहीं दिया ।"

"तो सारा दोष मेरा है न ? आपका कोई दोष नहीं और न हरेकृष्ण का," अमरसिंह ने झटके से अपनी कलाई छुङाकर कहा, "तो मुबारक हो यह युद्ध आपके हरेकृष्ण को; मैं चला।"

यह कहकर अमरसिंह क्रोध से फुफकारता हुआ चल दिया।

राजा कुंवरसिंह उसे जाते देखते रहे । तो क्या इसी तरह उनके सैनिकों में फूट पङती रहेगी ? क्या वे अकेले रह जाएंगे, अंग्रेजों के इतने विशाल साम्राज्य से लोहा लेने के लिए ?

१०

आशा की किरण

राजा कुवरसिंह चिन्तित थे । जगदीशपुर हाथ से छिन गया था, अनेक सिपाही मारे जा चुके थे और सामान भी लग- भग समाप्त हो गया था। उनकी स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि अगर इस समय अंग्रेजों की छोटी-सी सेना भी हमला कर देती तो इनमें से एक भी न बचता ।

मेजर आयर ने जिस तरह जगदीशपुर में खून-खराबो की, शहर को उजाङा और लाशों को पेङों पर लटकाया, उससे सारे इलाके में एक अजीब-सा भय समा गया था। कोई घर से बाहर तक निकलने की हिम्मत नहीं कर पाता था ।

यह हालत देख राजा कुंवरसिंह चिन्ता में डूब गए; मैं क्या अपनी छोटी-सी सेना को अंग्रेजों की विशाल सेना से भिङा दं ? क्या अपने इन देशभक्त सिपाहियों को मौत के मुंह में जानबूझकर झोंक दूं ? राजा कुंवरसिंह इसी प्रकार सोचते जाते और चिन्ता में डबते जाते। यह पहला अवसर था, जब उस बहादुर दिलेर राजा ने अपने को असहाय-सा पाया ।

रात गहरी होती जा रही थी और उसी के साथ-साथ राजा कुवरसिह की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। अब वे क्या करें ? अंग्रेजों ने आरा का मकान उजाङ दिया, जगदीशपुर के गढ़ पर

कब्जा जमा लिया, भाई अमरसिंह नाराज होकर चला गया, भाई रिपुभंजनसिह अंग्रेजों से मिल गया, परिवार असहाय पडा हुआ है, इधर हम जंगल में मारे-मारे फिर रहे हैं। क्या भविष्य होगा हमारा ? कल सूर्य निकलते ही अंग्रेज फिर हमें ढूंढ़ने निकलेंगे। तब क्या होगा ? कहां से लाऊं मैं इतनी बडी सेना जिससे दुश्मन से मुकाबला कर सकूं ? कहां से लाऊं इनके लिए खाना-पीना ? सुबह होने वाली है। फिर क्या होगा ? क्या ये सब वफादार सिपाही बेमौत मारे जाएंगे ? क्या मैं कुछ भी नहीं कर सकता ?

सोचते-सोचते राजा कुंवरसिंह की मुट्ठियां भिच गई। वे खडे होकर पिंजरे में बन्द शेर की तरह इधर-उधर चक्कर काटने लगे।

पूरब में लाली छाने लगी। तारों की जोत फीकी पडने लगी और चिडियां चहचहाने लगीं। राजा कुंवरसिंह अब भी चक्कर लगा रहे थे।

सूर्य भगवान की पहली किरण ने पेडों की चोटी की ओर बांह फैलाई। पूरब में सूर्य के लाल गोले का ऊपरी भाग दिखाई देने लगा और उसी के साथ राजा कुंवरसिंह ने देखा - एक व्यक्ति को सीधे अपनी ओर आते। पगडी और पोशाक से वह जमींदार लग रहा था।

उसने आते ही राजा को प्रणाम किया। राजा ने उसे आशीर्वाद दिया और प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा।

"मैं बरौन का जमींदार हूं, महाराज !" उस व्यक्ति ने सिर झुकाकर बताया, "आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूं।" "हूं," राजा कुंवरसिंह केवल सिर हिलाकर रह गए।

"दुलौर के युद्ध का हाल सुना तो दौडा-दौडा महाराज के बास पहुंचा हूं," उस जमींदार ने आगे कहा, "महाराज चिन्तित

न हों। इस इलाके के समस्त जमींदार तन-मन-धन से आपके साथ हैं। मैंने तो अपनी जमींदारी में घोषणा भी कर दी है कि 'अंग्रेजों के राज का अन्त हो गया है, अब यहां महाराजा कुंवरसिंह का राज है।' दूसरे जमींदार भी यही घोषणा कर रहे हैं।"

राजा कुंवरसिंह की आंखें खुशी से चमक उठीं। उन्हें अपने इलाके के लोगों का समर्थन भर चाहिए था, बाकी उनमें अंग्रेज से लोहा लेने की पूरी शक्ति थी।

"क्या आप लोगों के पास सिपाही भी हैं ?" उन्होंने जमींदार से पूछा।

"हमारे पास पक्के सिपाही तो नहीं हैं, लेकिन हमारी जमींदारी का प्रत्येक जवान आपके साथ जाने को तैयार है। और महाराज चिन्ता क्यों करते हैं ! हजारीबाग छावनी की दो कम्पनियों ने भी विद्रोह कर दिया है और वे आपसे मिलने शाहाबाद चल पडी हैं। उनका विचार था कि आप वहां होंगे," जमींदार ने बताया।

"यह खुशी की बात है," कुंवरसिंह ने कहा, "हम शाहाबाद अपने आदमी भेज देते हैं। वे वहां से दोनों कम्पनियों को यहां ले आएंगे।"

"हमने उन्हें पहले ही खबर भेज दी है, महाराज ! जमीं- दार ने कहा, "और दानापुर के बाकी सिपाही भी विद्रोह करके आ रहे हैं।"

"शाबाश !" कुंवरसिंह में अब तक जो निराशा भरी हुई थी, वह एकाएक दूर हो गई। उनका मन आत्मविश्वास से भर उठा।

"और भागलपुर की पांचवीं अनियमित सेना के सिपाहियों ने भी विद्रोह कर दिया है। वे भी आपसे मिलने आ रहे हैं।"

CHADDA

कुंवरसिंह ने चारों ओर अपने सिपाहियों को देखा। वे आवश्यक कार्यों से निबटकर तैयार हो चुके थे और अब कु'बरसिंह की आज्ञा की प्रतीक्षा में थे।

"ठीक है," कुंवरसिंह ने जमींदार से कहा, "हम सीधे रोहतास जाकर भागलपुर की सेना की प्रतीक्षा करते हैं। यहां कुछ सिपाही छोङ देंगे, जो हजारीबाग वाले सिपाहियों को भी वहीं ले आएंगे। हमें आप लोगों पर पूरा भरोसा है। हमारे सिपाहियों को कहीं कोई कष्ट न हो।"

"हम सब आपके साथ हैं, महाराज!" जमींदार ने सिर झुकाकर उत्तर दिया।

राजा कुवरसिंह ने तुरन्त रोहतास की ओर कूच करने का आदेश दिया। कुछ सिपाही वहीं छोङ दिए गए, ताकि वे वहां आने वाले विद्रोही सिपाहियों को राजा के पास पहुंचा सकें। बाकी सेना रोहतास की ओर बढ़ी।

उधर चारों ओर सिपाहियों के विद्रोह करने की खबर बिहार भर में फैल गई। अंग्रेजों को मालूम था कि ये सब विद्रोही राजा कु वरसिंह से मिलेंगे। अतः उन्होंने चारों ओर के रास्तों पर अपने आदमी लगा दिए, जिससे विद्रोही सिपाही राजा कुंवरसिंह तक न पहुंच सकें। लेकिन आजादी के दीवाने इन विद्रोहियों को कौन रोक सकता था ?

जिस दिन मेजर आयर जगदीशपुर को नष्ट कर रहा था, उसी दिन दानापुर के विद्रोही सिपाही राबर्टगंज पहुंचकर वहां की तहसील, थाने, कचहरी और खजाने को लूट रहे थे।

इसी तरह अन्य सेनाओं के विद्रोही सिपाही भी चतरा, मिर्जापुर, डेहरी, जब्बलपुर आदि अनेक स्थानों पर कचहरी, थाने आदि नष्ट करते रहे और वहां के सभी लोगों से कहते रहे, अब यहां महाराजा कुंवरसिंह का राज है। इस इलाके की

सारी मालगुजारी उन्हीं को दी जाए, अंग्रेजों को नहीं।

लेकिन मेजर आयर की सफलता से अंग्रेजों का साहस फिर बढ़ चुका था। भागलपुर के विद्रोही सिपाहियों को रोकने के लिए उनकी सेना सीधे रोहतास की ओर भागी, जिससे वे विद्रोही कुंवरसिंह की सेना से न मिल सकें।

दानापुर के विद्रोहियों को भी रोकने के लिए अंग्रेजों ने तुरन्त एक सेना भेज दी। इस प्रकार सभी विद्रोही सेनाओं को रोकने के लिए अंग्रेजों ने चारों ओर अपना जाल बिछा दिया।

राजा कुंवरसिंह ने इसका भरसक प्रयत्न किया कि सभी विद्रोही एक स्थान पर मिल जाएं। वे रोहतास से विजयगढ़ गए। वहां उन्हें निशानसिंह जैसे वीर योद्धा मिले। वहां से वे रामगढ़, फिर वहां से घेरावल, बालन-रुसेडा, नेवारी, हटिया- घाट, भैसौंध, ड्रमण्डगंज, बरौंधा, मांडा, कुन्दूर का चक्कर काटते रहे। अनेक स्थानों पर उनकी अंग्रेजों की सेना से मुठभेड हुई लेकिन वे अपनी पूरी विद्रोही सेना को संगठित न कर पाए।

तब, क्या राजा कुंवरसिंह इसी तरह भटकते रहे ?

११

बिहार से बाहर

"इस वक्त आपकी उम्र क्या होगी ?"

"करीब पचहत्तर वर्ष ।"

"वल्लाह ! कमाल है! भई, आप तो इन्सान के भेस में शेर हैं। इतनी ज्यादा उम्र और इतनी लङाइयां ! कमाल है ! अंग्रेज भी याद करते होंगे कि किस शेर से पाला पङा," नवाब साहब मसनद पर कुहनी टेककर सीधे बैठ गए और आश्चर्य से राजा कुंवरसिंह की ओर देखने लगे। उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था कि इतना वृद्ध व्यक्ति युद्ध के मैदान में इस तरह फुर्ती से तलवार चला सकता है और हजारों सैनिकों का संचालन कर सकता है।

"नवाब साहब !" कुंवरसिंह ने कहा, "हमारे पास ज्यादा बन्दूकें और बारूद नहीं रहा, वरना आज मैं पूरे बिहार को आजाद करने के बाद, मध्यभारत को आजाद करता हुआ यहां पहुंचता ।"

"हां, हमें यकीन है," अवध के नवाब ने कहा, "आप में

ताकत है, आपके सिपाहियों में जोश है। अगर आपके सब सिपाही भी एक जगह मिल जाते, तब भी आप बहुत कुछ कर सकते थे । लेकिन लगता है कि अंग्रेजों की किस्मत ज्यादा

बेहतर है। मेरा अपना खयाल है कि अगर आप अभी बिहार में ही रहते तो एक दिन जरूर सबको जमा करके फिर से श्रारा, दानापुर और जगदीशपुर - सब शहरों को अपने कब्जे में कर सकते थे।"

"जी हां," कुंवरसिंह ने उत्तर दिया, "लेकिन मैंने सोचा था कि मुझे बाहर से मदद मिल जाएगी। रीवां का राजा मेरा रिश्तेदार है। पहले उसके पास ही गया था।"

"तो कुछ मदद मिली उनसे ?"

"नहीं" कुंवरसिंह ने उत्तर दिया, "मैं रीवां से ७-८ मील दूर था, तभी उसने मुझे रीवां पहुंचने से मना करवा दिया। खैर, फिर भी मैं वहां के रईसों की मदद से रीवां पहुंचा। मेरे पहुंचते ही राजा और उसके घर वाले महल छोडकर भाग गए।"

"अच्छा, सचमुच ! " नबाब ने मुस्कराकर आश्चर्य से पूछा।

"जी हां, बाद में मुझे पता चला कि वह अंग्रेजों का मदद- गार था। शायद वह इस डर के मारे भगा कि कहीं मैं उसी पर हमला न कर दूं। फिर भी वहां के अंग्रेज राजनीतिक एजेण्ट और सेना के कर्नल ने हमारा डटकर मुकाबला किया । लेकिन जनता हमारे साथ थी। उसने एजेण्ट का घर घेर लिया।" "तब ?"

"मैं वहां रीवां के राजा से मदद लेने गया था, वह मुझे नहीं मिली। इसलिए मैं वहां से बांदा चल दिया। उस समय मेरे साथ दो हजार सिपाही थे। मैं बांदा जाकर जनरल तांत्या टोपे से मिलना चाहता था। २६ सितम्बर को वहां पहुंचा । तांत्या टोपे नहीं मिले। तब मैं वहां से कालपी रवाना हो गया। वहां मेरे पास ग्वालियर के विद्रोही सिपाहियों का संदेश आया कि वे मुझसे मिलने आ रहे हैं, इसलिए मैं अभी यमुना पार न

करूं। सो मैं वहां रुक गया ।"

"तब ?"

"तब ७ नवम्बर को ग्वालियर की सेना के सिपाही ४० तोपें लेकर मुझे कालपी में ही मिल गए। तब हम सब कानपुर में नाना साहब को मदद देने रवाना हुए ।"

"ओह ! इतनी दूर !"

"जी हां, कानपुर पहुंचने पर हमने और नाना साहब ने मिलकर अंग्रेजी सेना पर हमला किया। बहुत जोरों की लङाई हुई । लेकिन इससे पहले भी वहां कई लङाइयां हो चुकी थीं । अंग्रेज बहुत होशियारी से मोर्चाबन्दी किए हुए थे । मैं वहां के लिए नया था। हमें कामयाबी न मिल पाई। तब मैं फिर वहां से चल पङा, आपसे मिलने । अब यहीं पङाव डाला हुआ है ।"

अवध के नवाब कुछ देर तक एकटक उस विशालकाय वृद्ध राजा की ओर आश्चर्य से देखते रहे। नवाब समझ नहीं पा रहे थे कि इस बूढ़े व्यक्ति में इतनी हिम्मत और ताकत कहां से आई है !

इसी तरह कुछ देर तक देखने के बाद नवाब बोले, "वल्लाह ! कमाल है, राजा साहब ! कमाल है ! आपका हौसला और हिम्मत देखकर हमें यकीन होने लगा है कि अगर आप जैसे सिर्फ चार-छः राजा और हों, तो यह मुल्क अंग्रेजों को गुलामी से बेशक आजाद हो जाएगा। हमसे जो कुछ भी खिद- मत हो सकेगी, हम करेंगे। आज आप शाही मेहमान हैं।"

यह कहकर नवाब ने, ताली बजाई। दो लौंडियां हाजिर हो गईं।

नवाब साहब ने हुक्म दिया, "देखो, राजा साहब को इज्ज़त के साथ शाही मेहमानखाने ले जाओ । आप हमारे खास मेहमान हैं। और देखो, दीवान को भेज दो।"

दूसरे दिन नवाब साहब ने आम दरबार में राजा कुंवरसिंह का सम्मान बढ़ाने के लिए "बिलअत" प्रदान की और बारह हजार रुपए, कीमती पोशाक तथा अनेक हाथी नजराने में दिए। इसके बाद नवाब ने कुंवरसिंह से कहा, "राजा साहब, यह

हमारी तरफ से मामूली-सा नजराना है। लखनऊ मुसीबतों से घिरा हुआ है। पूरे अवध पर जंग के बादल मंडरा रहे हैं। आजमगढ़ हमारा इलाका है। हम आपको उसका राजा बनाते हैं और हमने अयोध्या के राजा मानसिंह को भी लिख दिया है कि वे आपको सोलह हजार रुपए भेंट करें।"

राजा कुंवरसिंह ने नम्रता से अभिवादन करके "खिलग्रत" तथा अन्य भेंट स्वीकार की और अपनी सेना लेकर अयोध्या की ओर रवाना हो गए।

राजा कुंवरसिंह वहां से दल-बल सहित रवाना हो गए।

अब उनका पहला काम था- आजमगढ़ जाकर कब्जा जमाना। उस समय राजा कुंवरसिंह की सेना के प्रमुख सिपहसालारों को बार-बार हरेकृष्ण की याद आ रही थी। जो हरेकृष्ण लगातार राजा साहब का दाहिना हाथ था, वह रीवां के बाद नहीं दिखाई दे रहा था और न राजा साहब ही कभी उसका जिक्र कर रहे थे।

तो फिर हरेकृष्ण कहां गया ? क्या वह अमरसिंह की तरह छोड़कर चला गया या अंग्रेजों से मिल गया..."

आजमगढ़ की ओर कूच

राजा कुवरसिंह अयोध्या से आगे बढ़े तो सूरजकुण्ड के निकट उनसे कुछ और सिपाही आ मिले।

"तुम कौन ?" कुंवरसिंह ने पूछा।

"अचरजसिंह हूं, माई-बाप !" एक सिपाही ने उत्तर दिया।

"कहां से आए हो ?"

"फिल्लौर से ?"

"फिल्लौर ?"

"हां, माई-बाप !" अचरजसिंह ने उत्तर दिया, "हमारी पल्टन पंजाब के फिल्लौर नगर में थी। चारों ओर सिपाहियों के विद्रोह की खबर सुनकर हम लोगों ने भी विद्रोह कर दिया और दिल्ली चले गए। वहां चारों ओर विद्रोह की आग फैली हुई है। जगह-जगह खून की नदियां बह रही हैं, अंग्रेज लोग बडी क्ररता से बदला ले रहे हैं। विद्रोही सिपाही तितर-बितर हो गए हैं। हमने पंजाब में आपका यश सुना था। सो हम लोग आपकी सेना में भरती होने चले आए हैं।"

"ठीक है," कुंवरसिंह ने कहा, "आज से तुम लोग हमारी सेना के सिपाही माने जाओगे। रणदलनसिंह के पास जाओ

वही तुम्हारे सेनापति रहेंगे।"

"बहुत अच्छा, माई-बाप !"

इह तरह रास्ते में और भी अनेक सिपाही मिलते गए और राजा कु' बरसिंह उन्हें अपनी सेना में भरती करते चले गए।

१७ मार्च, १८५८ को राजा कुंवरसिंह ने अतरौलिया पहुंचकर पङाव डाला। तब आजमगढ़ केवल २५ मील रह गया था, इसलिए यह आवश्यक था कि वहां से पूरी तैयारी और योजना बनाकर ही आगे बढ़ा जाए।

उधर अंग्रेजों के बीच सनसनी फैल गई। उन्होंने सुना कि राजा कुंवरसिंह बहुत बङी सेना और साज-सामान लेकर फिर बिहार वापस लौट रहे हैं। उन्हें अवध के नवाब ने आजमगढ़ का राजा बना दिया है। अब वे आजमगढ़ जाएंगे और फिर शाहाबाद होते हुए जगदीशपुर पहुंचेंगे।

अंग्रेज पहली बार देख चुके थे कि राजा कुवरसिंह से युद्ध करना लोहे के चने चबाना है। वे जिस प्रकार छापामार युद्ध करते हैं, उसका मुकाबला करना आसान नहीं है। यह तो केवल मेजर आयर की ही चालाकी थी कि वह कुवरसिंह को हरा सका।

यही सोचकर अंग्रेज घबरा रहे थे। अब फिर उस क्रुद्ध शेर से सामना करना पङेगा। लेकिन इसके अलावा अब उनके पास और चारा ही क्या था ? अगर कुंवरसिंह पहुंचते हैं, तो लङना ही पङेगा।

फलतः कनल मिलमैन अपनी सेना और तोपें लेकर अतरौलिया रवाना हो गया।

उस समय राजा कुंवरसिंह के पास थोङे-से सिपाही थे। बाकी जंगलों में इधर-उधर डेरा जमाए हुए थे। कर्नल मिल- मैन ने इन थोङे-से सिपाहियों को देखा तो खुशी के मारे उछल

पङा। उसने तुरन्त हमला करने का हुक्म दे दिया।

फिर क्या था। घमासान युद्ध छिङ गया।

कुवरसिंह के सिपाही पीछे हटने लगे। कर्नल मिलमैन के सिपाही आगे बढ़ने लगे।

"आज हमें अपनी सभी पिछली हारों का बदला लेना है," मिलमैन ने अपने सिपाहियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा, "आज कुंवरसिंह को जिन्दा न छोङा जाए। जो सिपाही कु वरसिंह का सिर काटकर लाएगा, उसे बहुत बङा इनाम दिया जाएगा।"

मिलमैन के सिपाही पूरे जोश से आगे बढ़ने लगे। कु ंवर- सिंह के सिपाही घिर गए।

...और फिर राजा कुंवरसिंह का वही चिर-परिचित पुराना इशारा।

विद्रोही भाग खङे हुए। मिलमैन जीत गया।

"शाबाश, मेरे बहादुरो !" कर्नल मिलमैन विजय की खुशी में चिल्लाया, कुंवरसिंह भी क्या याद करेगा, किससे पाला पङा। मैदान छोङकर भाग गया है।"

"हुजूर, अफसोस की बात यही है कि वह पकङा नहीं जा सका," एक खुशामदी सैनिक ने कहा।

'सामने आम का बाग है। वहां तुम लोग आराम करो और डटकर खाना खाओ। कल हम इस जंगल को छान मारेंगे। और अगर वह यहां नहीं मिला, तो सीधे आजमगढ़ कच करेगे। बच्चू जाएगा कहां !"

मिलमैन की सारी सेना आम के बाग में जाकर जम गई। सैनिक खाना बनने की प्रतीक्षा में सुस्ताने लगे।

जगह-जगह चूल्हे बने हुए थे और रसोइए खाना बना रहे थे।

खाना बना और सभी सैनिक पंक्तियों में बैठ गए। रखो-

इयों ने खाना परोसा। सैनिक भूखे थे ही, खाने पर टूट पडे।

लेकिन उसी समय बाग के चारों ओर से 'विद्रोही सिपाही भी भूखे शेरों की तरह दहाडते हुए उन पर टूट पडे।

क्षणभर में भगदड मच गई। सैनिकों के हाथ का निवाला हाथ में रह गया और मुंह का मुंह में। कर्नल मिलमैन की धिग्गी बंध गई।

"धोखा, महान् धोखा," वह जोर से चिल्लाया, "कुंवरसिंह ने हमें धोखा दिया है।"

"अबे, तो तूने ही कौन-सा ऐलान करके हमला किया था ?" एक सिपाही ने आगे बढ़कर कहा और मिलमैन पर लपककर बार किया।

मिलमैन वार बचा गया, लेकिन उस हमले से वह इतना डर गया कि बिना इधर-उधर देखे सीधे बाग के बाहर की ओर भागा। उसके भागते ही समस्त सैनिकों में भगदड मच गई। आधे से अधिक तो पहले ही मर चुके थे, बाकी मैदान छोड- कर भाग खडे हुए।

कुंवरसिंह विजयी शेर की तरह तलवार की नोक को जमीन से टेककर उन भगोडों की ओर देखते रहे।

आज उन्होंने अतरौलिया को जीत लिया था।

राजा कुंवरसिंह उसी तरह तलवार टेके खडे थे। रणदलन- सिंह आगे की योजना पूछने उनके पास पहुंचे। तभी एक सिपाही ने आकर कुंवरसिंह को प्रणाम किया।

"अरे !" रणदलनसिंह के मुह से अचानक निकल पडा। वह आश्चर्य से आंखें फाडकर उस सिपाही की ओर देखने लगा।

राजा कुंवरसिंह और वह सिपाही - दोनों मुस्कराए।

"नहीं पहचाना क्या ?" उस सिपाही ने रणदलन सिंह से

CHADDA

पूछा।

"अरे, भैया हरेकृष्ण, तुम ?" रणदलनसिंह ने कहा और उस सिपाही से लिपट गया।

राजा कुंवरसिंह मुस्कराते रहे।

"कहां रहे अब तक ?" रणदलसिंह ने पूछा, "मैंने राजा साहब से अनेक बार मालूम करना चाहा, पर इन्होंने कुछ नहीं बताया।

"अच्छा, अच्छा, सब बता दूंगा," हरेकृष्ण ने कहा, "पहले आजमगढ़ कूच करने की तैयारी करो। जितनी तोपें और सामान है, सब जमा करो। मिलमैन को एक दिन भी आजम- गढ़ में चैन से नहीं बैठने देना है, वरना वह बाहर से और सहायता मांग लेगा।"

"बहुत अच्छा, चलो," रणदलनसिंह ने कहा।

सब सामान बैलगाडियों पर लाद दिया गया। अंग्रेजों में खलबली मची हुई थी, इसलिए आजमगढ़ जीतना आसान था। उन्होंने तुरन्त कूच कर दिया।

रास्ते में रणदलनसिंह ने पूछा, "अच्छा, अब बताओ, कहां रहे अब तक ?"

"तो सुनो," हरेकृष्ण ने उत्तर दिया, "राजा साहब ने मुझे एक खास काम के लिए तैनात किया था। जब वे रीवां गए, तब

उन्होंने मुझे गोरखपुर भेज दिया था।"

"क्यों ?"

"गोरखपुर में मेरा खास काम था - सेना के लिए गोरखे

सिपाही भरती करना और वहां के विसेन राजपूतों को अंग्रेजों

के विरुद्ध भड़काना। लेकिन इसमें एक कठिनाई थी।"

"कौन-सी ?"

"अगर मैं सैनिक भरती करता और सैनिकों के बीच रहता

तो अंग्रेजों को शक पड जाता ।"

"तब क्या किया तुमने ?"

"तुम जानते ही हो कि रिपुभंजनसिंह राजा साहब का भतीजा है और अंग्रेजों का पिट्ठु है। उसी ने अनक बाय हमारी गुप्त योजनाएं अंग्रेजों को बताई थीं। उसी ने आरा जिलाधीश को कागज भेजा था कि दानापुर छावनी में २५ जुलाई को विद्रोह होगा।"

"हां, सुना तो ऐसा ही है।"

"तो मैंने गोरखपुर जाकर यही बताया कि मैं रिपुभंजन सिह हूं । सौभाग्य की बात है किसी ने उसे देखा नहीं था।"

"अच्छा !"

"हां, और तब मेरा काम सरल हो गया। मैं सैनिक भरती करता था और विसेन राजपूतों को भडकाता जाता था । मैंने वहां दो हजार से भी अधिक सिपाही भरती किए । अंग्रेजों को मुझ पर रत्ती-भर भी शक नहीं हुआ ।"

"वाह, वाह," रणदलसिंह ने खुश होकर कहा, "कमाल किया तुमने । तभी तो हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि तुम अचानक कहां गायब हो गए ।"

अब राजा कुंवरसिंह की सेना में चार हजार से अधिक सिपाही हो गए थे। क्या कुंवरसिंह आजमगढ़ जीत सके ?

१३

अंग्रेज सेनापति जेल में

कर्नल मिलमैन व्यग्रता से कमरे में चक्कर काट रहा था । अतरौलिया से अपने बचे-खुचे सैनिकों के साथ भागकर उसनें आजमगढ़ की जेल में शरण ली थी।

वह सोच रहा था, 'अब में क्या करूं ? अतरौलिया में जीती बाजी हार गया। जान बच गई, यही क्या कम है ? कुंवरसिंह सेना लेकर यहां ४-५ दिन में पहुंच जाएगा। तब ? उसका मुकाबला करना हंसी-खेल नहीं है। तिगुनी सेना हो, तब उससे जीतने की आशा की जा सकती है। तो क्यों न मैं तुरन्त बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ को सहायता के लिए लिखूं।'

इतना सोचते ही खुशी के मारे मिलमैन की आंखें चमक उठीं । उसने तुरन्त तीन पत्र लिखे । तीनों में उसने अपनी दयनीय स्थिति बताई तथा सहायता की याचना की और उन्हें अपने खास घुड्सवारों को देकर बनारस, इलाहाबाद तथा लखनऊ दौड़ा दिया ।

ये पत्र उसने २३ मार्च, १८५८ को लिखे थे । २८ मार्च को उसने देखा कि कुछ अंग्रेज सिपाही भागते हुए चले आ रहे हैं।

कर्नल मिलमैन का दिल धक से रह गया। तो क्या बाहर से मदद के लिए आने वाली फौज को कुंवरसिंह ने रास्ते में ही साफ कर दिया ? मिलमैन ने उन अंग्रेजों की ओर गौर से देखा। वे काफी निकट आ चुके थे।

"अरे, यह तो डेम्स है, कर्नल डेम्स ?" मिलमैन चौंक पडा।

वह कर्नल डेम्स को जानता था और उसे मालूम था कि भ्राजकल कर्नल डेम्स बनारस में है। 'तो क्या बनारस की फौज नष्ट हो गई ? क्या कर्नल डेम्स जैसा बहादुर भी कुंवर- सिह के सामने भाग खडा हुप्रा ?'

मिलमैन ने जेल का फाटक खुलवाया। डेम्स अन्दर पहुंचा, वह बुरी तरह हांफ रहा था और पसीने से लथपथ था।

"तो तुम रास्ते में ही कुंवरसिंह के चंगुल में फंस गए ?" मिलमैन ने पूछा। वैसे वह डेम्स की हालत देखकर ही पूरा मामला समझ चुका था।

"बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा," डेम्स ने रूमाल से अपने मुह पर हवा करते हुए कहा। उसका मुह लाल हो गया था और बार-बार पसीने से तर हो जाता था।

"ओफ ! वह आदमी है या यमदूत," डेम्स ने फिर कहा, "इतना बूढ़ा हो गया है, फिर भी अच्छे-अच्छे जवानों की तरह छलांगें मारता है। मैं तो बनारस से फौज लेकर चला। फिर गाजीपुर से भी मैंने और सिपाही ले लिए। मैंने सोचा था कि अधिक सैनिक रहेंगे तो कुंवरसिंह और उसके एक भी सिपाही को जिन्दा नहीं रहने दूंगा। यह रोज-रोज का युद्ध हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा। पर मुझे क्या मालूम था कि उसका एक- एक सिपाही हमारे तीन-तीन सिपाहियों के लिए काफी है।"

"वे हमला भी तो बडे धोखे से करते हैं," मिलमैन ने कहा। इस समय उनके पास कोई भारतीय सैनिक या अंगरक्षक

नहीं था, इसलिए वे खुलकर बातें कर रहे थे।

"हां, वे छापामार युद्ध करते हैं," डेम्स ने उत्तर दिया, "हमें यदि उनसे जीतना है तो पहले उनका लडने का तरीका अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। तुम्हारे पास कुछ फौज है ?"

"नहीं," मिलमैन ने उत्तर दिया, "मेरे बहुत कम सैनिक बच पाए।"

"तब क्या होगा ?" डेम्स ने बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ से मुक्का मारा, "कुंवरसिंह तो कल यहां पहुंच जाएगा।"

"मैंने इलाहाबाद और लखनऊ को भी मदद के लिए लिखा था," मिलमैन ने कहा, "शायद जल्दी ही मदद आ जाए।"

"अरे, आएगी कैसे ? रास्ते में कुंवरसिंह जो बैठा है। वह उन्हें ऐसे ही आनें देगा ?"

"अब हम कर ही क्या सकते हैं ! अब तो बस भगवान पर ही भरोसा किया जा सकता है।"

"क्या यहां हम सिपाही भरती नहीं कर सकते ? उन्हें अच्छी तनख्वाह देंगे ! "

"यहां का एक-एक बच्चा कुंवरसिंह के साथ है। कोई हमारी फौज में भरती नहीं होगा।"

"तब तो बस भगवान ही हमारा रक्षक है।"

"शायद लखनऊ और इलाहाबाद की फौजें कुछ कर सकें।"

"इलाहाबाद से मुझे भी आशा है। लखनऊ से तो फौज का धाना कठिन है। वहां भी आजकल बहुत जोरों से युद्ध चल रहा है। वहां तीन बार खून की नदियां बह चुकी हैं। हमने वहां कत्ले-आम तक किया, लेकिन ये हिन्दुस्तानी न जानें फिर कहां से पैदा हो जाते हैं। लखनऊ में हमने तीन बार विद्रोहियों का सफाया किया। फिर भी वहां विद्रोह शान्त होने का नाम नहीं ले रहा है। अब तो सुना है, बेगमें भी मैदान में आ गई हैं।"

"बेगमें ?" मिलमैन ने आश्चर्य से कहा। उसे मालूम था कि नवाबों की बेगमें कितनी पर्दानशीन होती हैं।

"हां, बेगमें," डेम्स ने उत्तर दिया, "हमारी फौज ने विद्रोहियों को बहुत बेदर्दी से मारा। उन्हें जिन्दा जला दिया । हमारे सैनिक महल में घुस गए। वहां जनानखाने में जाकर उन्होंने लूट-पाट की। तब वहां की सबसे बडी बेगम हजरत महल मरदाने कपडे पहने तलवार हाथ में लेकर बाहर आ गई । सुना है कि उसते बेगमों को पहले ही से युद्ध लडना सिखला दिया था।"

"हे भगवान ! कैसी मर्दानी औरतें हैं यहां की, सुना है उधर झांसी में भी औरतों की पल्टन है।"

"हां, इस हिन्दुस्तान की मिट्टी ही ऐसी है। मौका पडते पर यहां की औरतें भी पीछे नहीं रहतीं। इस देश पर शासन करना आसान नहीं ।"

दोनों कर्नल व्यग्र थ-आगे क्या होगा। क्या इलाहाबाद और लखनऊ से आने वाली सेनाओं को भी इसी तरह मुंह की खानी पडेगी ?

आजमगढ़ का घेरा

राजा कुवरसिंह ने धूमधाम से आजमगढ़ में प्रवेश किया। कर्नल मिलमैन और कर्नल डेम्स दोनों ही जेल के अन्दर मोर्चा जमाए हुए थे। बाकी सभी जगह राजा कुंवरसिंह ने कब्जा जमा लिया। अब जेल को छोड़कर बाकी पूरा आजमगढ़ उनका था।

"महाराज, अब तो यहां घोषणा की जा सकती है कि भ्राजमगढ़ के राजा आप हैं," हरेकृष्ण ने सलाह दो, "सबूत के लिए आप अवध के नवाब का फरमान दिखा सकते हैं।"

"नहीं, हरेकृष्ण, अभी हम एक जगह टिककर नहीं रह सकते," कुवरसिंह ने उत्तर दिया, अभी हमें शाहाबाद पर कब्जा जमाकर सीधे जगदीशपुर पहुंचना है। वहीं हम यह घोषणा करेंगे। एक जगह रह जाने से दूसरी जगह अंग्रेज अपने हाथ मजबूत कर लेंगे। हमें पूरे बिहार में युद्ध जारी रखना है, जिससे अंग्रेज कहीं भी अच्छी तरह न जम सकें।"

"तो अब हम यहां कुछ सिपाही छोड़कर शाहाबाद कूच कर सकते हैं," हरेकृष्ण ने कहा।

"नहीं, श्रभी समय नहीं आया है," कुंवरसिंह ने उत्तर दिया, "देखो, हमारे जासूसोंने बताया है कि मिलमैन ने बनारस,

इलाहाबाद और लखनऊ को पत्र लिखे। बनारस से कर्नल डेम्स पहुंचा और हमसे हारा। लखनऊ में युद्ध चल रहा है, इसलिए वहां से सहायता आने की आशा कम है। इलाहाबाद से सहायता अवश्य पहुंचेगी। लार्ड केनिंग आजकल वहीं है। उसने मिलमैन का पत्र पाते ही फौज भेज दी होगी। हमें पहले उसका मुकाबला करना है। हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि इलाहाबाद से आने वाली फौज आजमगढ़ ही न पहुंच सके।"

"तब तो हमें तुरन्त रवाना हो जाना चाहिए, क्योंकि इलाहाबाद से आने वाली फौज को अब अधिक दिन नहीं लगेंगे," निशानसिंह ने कहा।

"हमें यहां पर कुछ सोचकर चलना है," कुवरसिंह ने गम्भीर आवाज में कहा, "पहली बात तो यह है कि हमें मालूम नहीं कि फौज किस रास्ते से आएगी। दूसरे हम यह भी नहीं जानते कि फौज कितनी बडी होगी। हमारे जासूस जब तक हमें सूचना देते हैं और हम यहां से रवाना होते हैं, तब तक फौज काफी नजदीक आ जाएगी। और यह अच्छा ही होगा, क्योंकि मान लो फौज छोटी-सी है, तब हम बेकार बहुत अधिक सिपाही क्यों भेजें ? यह भी तो हो सकता है कि हमारे जरूरत से ज्यादा सिपाही उधर चले जाएं और इधर लखनऊ से दूसरी फौज आ जाए। अगर हम आजमगढ़ के नजदीक ही लडेंगे तो हमें अधिक आसानी रहेगी।"

"तो हमारे लिए क्या हुक्म होता है ?" हरेकृष्ण ने पूछा। "निशानसिंह आजमगढ़ पर घेरा डाले रहेंगे," कुंवरसिंह ने उत्तर दिया, "जासूसों से सूचना मिलते ही हम और हरेकृष्ण अपने सिपाहियों को लेकर इलाहाबाद से आने वाली फौज को रोकने चले जाएंगे। रणदलनसिंह अपने सिपाहियों सहित यहां तैयार रहेंगे। अगर लखनऊ से भी फौज आई तो रणदलसिंह

CHADDA

आगे बढ़कर उसको रोकेंगे और अगर हमें सहायता की आवश्यकता हुई तो भी रणदलनसिंह यहां से अपने सिपाही भेजेंगे।"

"जो आज्ञा, महाराज!" हरेकृष्ण ने कहा, "मैं अपने सिपाहियों को तैयार करता हूं।"

"हां, तैयार हो जाओ, हमारे जासूस किसी भी समय आकर सूचना दे सकते हैं," कु वरसिंह ने हरेकृष्ण से कहा और फिर निशानसिंह की ओर मुड़कर बोले, "सुनो, निशासिह आजमगढ़ पर तुम्हारा कब्जा रहना चाहिए। हो सकता है कि हम इलाहाबाद की फौज का मुकाबला करने के बाद शाहाबाद या जगदीशपुर चले जाएं। यहां की पूरी जिम्मेदारी तुम पर है। तुम्हारे साथ दो हजार सिपाही रहेंगे।"

"जो आज्ञा महाराज !" निशानसिंह ने उत्तर दिया ।

इस प्रकार राजा कु वरसिंह ने पूरी व्यवस्था कर दी।

और जैसी आशा की जा रही थी, जासूसों ने आकर सूचना दी कि इलाहाबाद से लार्ड मार्ककर अपनी फौज के साथ चला आ रहा है।

कु'वरसिह अपने सिपाही लेकर तुरन्त रवाना हो गए । जासूस रास्ता दिखाने साथ चले ।

"यहां से ७-८ मील दूर मरसाना गांव है," जासूस ने बताया, "मेरा विचार है कि लड़ने के लिए वह जगह बहुत अच्छी है। वहां एक बहुत पुराना मकान है। उसमें छिपकर मार की जा सकती है।"

" उसके साथ वित्ने सैनिक है ?" कुवरसिह ने पूछा ।

"काफी हैं," जासूस ने उत्तर दिया, "शायद हमें आजमगढ़ से सहायता मांगनी पड़े। तोपें, गोला-बारूद श्रादि सामान बहुत है।"

"तो हम अपने सिपाहियों को दो भागों में बांट लेते हैं,"" कु'बरसिंह ने सोचकर कहा, "एक दल मकान में छिनकर लडेगा और दूसरा दल कुछ दूर छिपा रहेगा; मौका पाते ही वह पीछे से मार करेगा। तब अंग्रेजों की फौज दो भागों में बंट जाएगी।"

"हां, यह तरीका ठीक है," जासूस ने हामी भरी।

मरसाना पहुंचकर कुंवरसिंह ने अपनी योजना के अनुसार हरेकृष्ण को एक दल के साथ आगे भेज दिया। वह दल मुख्य रास्ते से बाईं ओर घूमकर आगे बढ़ा और पेडों तथा मिट्टी के टीलों के पीछे छिप गया।

राजा कुवरसिंह ने भी मकान के अन्दर दूसरा दल ले- जाकर मोर्चा जमा लिया।

लार्ड मार्ककर पूरे दल-बल सहित चला आ रहा था।

कुंवरसिंह सबसे ऊंची दीवार पर चढ़कर देखने लगा। सबसे आगे हाथी तोपें घसीटते चले आ रहे थे। उनके पीछे घुडसवार, फिर पैदल सेना और फिर ऊंटों की लम्बी कतार। उनके पीछे बैलगाडियों का काफिला।

कुवरसिंह के माथे पर बल पड गए। तो क्या इसी छोटे- से दल को लेकर इतनी बडी फौज का मुकाबला कर लें, या फिर आजमगढ़ से सहायता मंगा लें ?

मरसाना का युद्ध

राजा कुवरसिंह ने सहायता नहीं मंगाई।

लार्ड मार्ककर की सेना आगे बढ़ती चली आई. और बिल्कुल मकान के निकट पहुंच गई।

धांय-धांय- मकान के अन्दर से गोलियां छूटने लगीं।

कूच करती फौज एकाएक रुक गई। दो-चार घुड्सवार गिर पडे। घोडे जोर से हिनहिनाने लगे। मार्ककर समझ गया कि कुंवरसिंह के सिपाही उसे आगे बढ़ने से रोक रहे हैं। उसने अपने घुड्सवारों को तुरन्त हमला करने का हुक्म दिया।

दोनों ओर से गोलियां छटने लगीं। गोलियों की चोट से घोडे बिदकने लगे, अंग्रेज सैनिक घडाधड गिरने लगे और उस टूटे-फूटे मकान की ईंटें चटकने लगीं।

"अन्दर घुसकर हमला करो !" मार्ककर ने क्रोध से श्राग-बबूला होकर पैदल सेना को आदेश दिया।

क्षणभर में पैदल सेना के सिपाही मकान के अन्दर घुस गए। लाशों पर लाशें पटने लगीं; खून की नदियां बहने लगीं। कुंवरसिंह के सिपाही आड में थे। इसलिए मार्ककर के सैनिक ही अधिक मरे। वह विचलित हो उठा।

"बाहर चले आओ," उसने अपने सैनिकों को हुक्म दिया।

जो सैनिक मकान के अन्दर गए थे, बाहर निकल आए। अन्दर से लगातार गोलियां छूटती जा रही थीं। मार्ककर के सैनिक धडाधड मरते जा रहे थे। माककर की आंखों में खन उतर श्राया।

"घेरा डाल दो !" उसने हुक्म दिया।

सैनिकों ने मकान के चारों ओर फैलकर घेरा डाल दिया।

"आग लगा दो !" मार्ककर ने दूसरा हुक्म दिया।

देखते-देखते दर्जनों मशालें जल उठीं। मकान के टूटे दर- बाजों, कडियों और घास-फूस में आग लगा दी गई। सारा मकान आग की ज्वाला में धधकने लगा।

कुंवरसिंह के सिपाही शोर मचाते हुए मकान के बाहर निकल आए। उस आग और धुएं के बीच मार्ककर का भीषण अट्टहास गूंज उठा।

कुंवरसिंह ने अपने सफेद घोडे को जोर से एड लगाई। घोडा एकदम तडपकर आगे बढ़ा। और कुंवरसिंह की चम- चमाती तलवार मार्ककर की गर्दन पर पडने ही वाली थी कि मार्ककर का घोडा एकाएक गोली खाकर गिर पडा और उसके साथ ही मार्ककर भी। कुंवरसिंह का बार खाली चला गया। मार्ककर बच गया।

कुंवरसिंह को बढ़ते देख उनके सिपाहियों की रगें फडक उठीं। वे अपने प्राणों को हथेली पर रखकर मार्ककश की सेना से भिड गए।

और ६ अप्रैल, १८५८ का वह ज्वालामय दिन, सूर्य की प्रखर किरणों के समान ज्वाला बरसाने वाला वह एक दिन। भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास का वह अमर दिन। एक ओर लार्ड मार्ककर की विशाल सेना और दूसरी ओर राजा कुंवरसिंह के मुट्ठीभर सिपाही !

आजमगढ़ से ८ मील दूर उस मरसाना गांव के मैदान में चारों ओर लाशें ही लाशें दिखाई देने लगीं; भूरी मिट्टी लाल हो उठी, सारा आसमान धूल से भरा उठा। कुवरसिंह का एक-एक सिपाही मार्ककर के तीन-तीन सैनिकों को घरती पर सुलाता जा रहा था।

मार्ककर ने दूसरा घोङा लिया और भागे बढ़ा ही था कि पीछे से उसकी सेना में भगदङ मच गई। मार्ककर ने अपने घोङे को एक ओर घुमाया और पीछे देखा।

पीछे उसकी सेना में भगदङ मची हुई थी। वह घूमकर एक किनारे हो गया। शायद पीछे से हमला हो गया है, उसने सोचा।

एक घुङसवार तेजी से उसके पास से गुजरा। मार्ककर ने हाथ के इशारे से उसे रोका और कङककर पूछा, "क्या बात है ? क्यों भाग रहे हो ?"

"हुजूर, पीछे से हमला हो गया है। हमारी बैलगाङियां..." घुङसवार इतना ही कह पाया था कि एक गोली उसके सीने में लगी और वह वहीं गिर पङा।

मार्ककर घबरा गया। वह भी किसी क्षण इसी तरह गोली का शिकार हो सकता है। दो दिशाओं से चुका है। अब जीतने की कोई उम्मीद नहीं रही। सैनिक मर चुके थे। हमला हो अधिकांश

"कच करो !" उसने जोर से आदेश दिया और बिना किसी ओर देखे अपने घोङे को सीधे आगे की ओर सरपट भगाया।

राजा कुंवरसिंह ने अपने घोङे की रास खींची और पीछे मुङकर देखा।

मार्ककर सीधे आजमगढ़ की ओर भागा जा रहा था। उसे

भागते देख उसके बचे-खुचे सैनिक भी उसी ओर भागे जा रहे थे।

कुंवरसिंह मुस्कराए। यही तो वे चाहते थ। उन्होंने अपने घोडे की गर्दन थपथपाई और नीचे उतर पडे।

"महाराज कुंवरसिंह की जय !" पीछे से अनेक सिपाही नारा लगाते हुए आ रहे थे।

कुंवरसिंह ने मुडकर उनकी ओर देखा। सबसे आगे घोडे पर सवार सीना ताने हरेकृष्ण चला आ रहा था। उसके पीछे सिपाही और फिर हाथियों, ऊंटों तथा बैलगाडियों की लम्बी कतार।

"कितना हाथ लगा ?" हरेकृष्ण के निकट पहुंचने पर कु ंवरसिंह ने पूछा।

"महाराज का इकबाल बुलन्द रहे," हरेकृष्ण ने दाहिने हाथ से तलवार ऊंची करके उत्तर दिया, "रसद से भरी ६२ बैलगाडियां, ११ ऊंट, १० हाथी और कुछ घोडे।"

"तुमने तो पीछे से वह मार लगाई कि बेचारों में भगदड मच गई," कु वरसिंह ने हंसकर कहा, "अब वे बेचारे सीधे ग्राजमगढ़ जाकर ही पानी पिएंगे।"

"और वह भी जेल का," हरेकृष्ण ने कहा।

अनगिनत लाशों और धूलभरे आसमान के बीच जोर का ठहाका गूंज उठा।

"निशानसिंह उन सबको सीधे मिलमैन और डेम्स के पास ही पहुंचा देगा," कुंवरसिंह ने कहा, "अब हमें सीधे जगदीश- पुर पहुंच जाना चाहिए। हम वहां भी युद्ध शुरू कर दें। इससे अंग्रेजों को लाचार होकर अपने कुछ सैनिक जगदीशपुर भी भेजने पड जाएंगे और इस प्रकार उनकी फौज दो भागों में बंट जाएगी। आजमगढ़ में निशानसिह काफी है।"

"जैसा आप ठीक समझें," हरेकृष्ण ने कहा।

"हां, यही ठीक रहेगा," कुंवरसिंह बोले, "हमारे सिपाही थक गए हैं। उन्हें कुछ आराम चाहिए। कुछ दिन यहीं पडाव डाला डाए। फिर जगदीशपुर रवाना होंगे। तब तक हमें आजमगढ़ से भी सूचना मिल जाएगी।"

और फिर मरसाना के निकट ही कुवसिंह ने पडाव डाल दिया। आसपास के जमींदार तथा गांव वाले उन्हें दूध, दही, घी और अनाज पहुंचाने में अपना सौभाग्य समझते रहे। ४-५ दिन बाद कु वरसिंह को दल-बल सहित जगदीशपुर की ओर रवाना हो जाना था।

लेकिन क्या वे जगदीशपुर पहुंच सके ?

१६

लखनऊ से सहायता

राजा कु वरसिंह को सूचना मिल गई थी कि लार्ड मार्ककर ने भी मिलमैन और डेम्स की तरह जेल में शरण ले ली है।

"अब तो अंग्रेजों के तीन सेनापति एक ही जगह इकट्ठे हो गए हैं," हरेकृष्ण ने व्यंग्य से कहा, "क्यों न ऐसा किया जाए कि जितने भी अंग्रेज सेनापति हों, सबको वहीं एक जगह भेज दिया जाए और फिर बिहार जीतने के बाद उन सबका एक लम्बा जुलूस निकाला जाए।"

कुंवरसिंह मुस्कराए।

"लखनऊ की ओर से तो अभी कोई सूचना नहीं आई ?" हरेकृष्ण ने फिर पूछा।

"अभी तक नहीं आई," कुवरसिंह ने उत्तर दिया, "लेकिन एक और बात की सूचना मिली है।"

"कौन-सी ?"

"अमरसिंह ने शाहाबाद के दक्षिणी इलाके में आतंक मचा रखा है," कुंवरसिंह ने बताया, "उसने काफी बडी फौज जमा कर ली है और कभी एक जगह तथा कभी दूसरी जगह अंग्रेजों पर धावा कर देता है। इससे अंग्रेज घबराए हुए हैं।"

"अच्छा !" हरेकृष्ण ने श्राश्चयं से कहा, "इससे पहले भी

तो वे कैमूर पहाङी और ससराम में आतंक मचाए हुए थे । उनके छापामार युद्ध से हमें भी काफी मदद मिल रही है।"

"हां, अमरसिह हमारे लिए बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है," कुंवरसिंह बोले, "उसने वहां सभी जमींदारों और गांव वालों से कह दिया है कि जल्दी ही बिहार से अंग्रेज भाग जाएंगे और राजा कुंवरसिंह का राज्य हो जाएगा ।"

"तभी तो अंग्रेजों ने उन्हें पकङकर लाने वाले को पांच हजार रुपया पुरस्कार देने की घोषणा की है।"

"पुरस्कार तो तुम्हें और निशानसिंह को पकङने के लिए भी दिया जाएगा," कुवरसिंह ने मुस्कराकर कहा, "तुम्हें पकङने पर पांच हजार रुपया और निशानसिंह को पकङने पर एक हजार रुपया ।"

"अंग्रेजों ने बेचारे निशानसिंह की कीमत बहुत कम आंकी," हरेकृष्ण ने कहा और जोर से हंस पङा ।

"अभी उन्हें निशानसिंह की करतूतों का पूरा पता नहीं है, इसीलिए इतनी कम रकम लगाई गई है," कु वरसिंह ने मुस्करा- कर कहा, "जब उन्हें पता चल जाएगा कि उसने तीन-तीन अंग्रेज सेनापति बन्द कर रखे हैं, तब उसकी कीमत बढ़ा दी जाएगी।"

"हमें अमरसिंह जी का भी ध्यान रखना चाहिए," हरेकृष्ण ने एकाएक गम्भीर होकर कहा, "कहीं वे अंग्रजों के चंगुल में न फंस जाएं।"

"उसकी चिन्ता न करो। आखिर वह मेरा छोटा भाई है। वह अंग्रेजों के चंगुल में नहीं श्रा सकता," कंवरसिंह ने कहा, "अब तुम्हें लगता है न, कि अमरसिंह को भी हमारे साथ रहना चाहिए।"

"मैंने तो जब से उनकी वीरता के किस्से सुने और सुना कि

यहाँ से झगडा करने के बाद भी वे अंग्रेजों के विरुद्ध लड रहे हैं, तब से मैं लगातार यही सोचता था कि उन्हें हमारे ही साथ रहना चाहिए। हम सब मिलकर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर सकते हैं। अलग-अलग रहने से हमारी शक्ति बंटी रहेगी।"

"लेकिन तुमने मुझसे कभी नहीं कहा।"

"कैसे कहता ? उस दिन आपके सामने मैंने उद्दण्डता दिखाई। अब कहने में लज्जा आती थी।"

"देखो, हरेकृष्ण," राजा कुंवरसिंह ने समझाया, "जहां बडा परिवार होता है, वहां कभी तू-तू मैं-मैं हो ही जाती है। हमारा भी तो यह चार-पांच हजार का इतना बडा परिवार है। किसी बात में मनमुटाव हो गया तो फिर मेल भी हो सकता है। मुझे खुशी हुई है कि तुम्हें अमरसिंह की चिन्ता है।"

हरेकृष्ण की आंखें गीली हो गईं; बोला, "महाराज ! मैं मापका सेवक हूं। आपने मेरे कारण अपना छोटा भाई छोडा। तब से मैं बहुत शमिन्दा था। मैं तो बराबर यही चाहता था कि मगर अमरसिंह जी मिल जाएं तो उनसे क्षमा मांग लूं।"

हरेकृष्ण की गीली आंखें देख कुंवरसिंह की आंख भी नम हो गई। मेरा छोटा भाई ! बेचारा जंगलों में भटक रहा है, मेरी तरह अंग्रेजों से युद्ध कर रहा है। कितना बडा दिल है उसका ! मुझसे झगडकर गया, परन्तु अपना कर्तव्य नहीं भूला। कुंवरसिंह इन्हीं विचारों में डूब गए।

यकायक उन्हें ध्यान आया कि हरेकृष्ण सामने है। कहीं मेरी कमजोरी न भांप ले। वे तुरन्त बोले, "चलो, तैयारी करो। अब हमें जगदीशपुर पहुंचना चाहिए।"

"जो ग्राज्ञा," हरेकृष्ण ने आंखें पोंछकर कहा और कूच की तैयारी करने चल दिया।

लेकिन तैयारी होते-होते जासूसों ने आकर बताया कि

लखनऊ से सर लुगार्ड १८ तोपें और पूरी एक ब्रिगेड सेना लेकर चला आ रहा है।

"लुगार्ड इतनी बडी सेना से आजमगढ़ पर कब्जा जमा सकता है," कुवरसिंह ने चिन्तित होकर हरेकृष्ण से कहा, "हमारे लिए यह जरूरी है कि हम उसकी सेना को दो-तीन भागों में बांट दें।"

यह कहकर कुंवरसिंह अपने विचारों में डूब गए। कुछ क्षण बाद उन्होंने हरेकृष्ण की ओर देखा। हरेकृष्ण चुपचाप उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करता रहा।

"देखो, हरेकृष्ण !" कुवरसिंह ने कहा, "हम गाजीपुर के पास गंगा पार करके जगदीशपुर जाएंगे। लुगार्ड की सेना तमसा नदी को नावों के पुल से पार करके आएगी। नदी के इस ओर अपने कुछ सिपाही भेज दो। वे लुगार्ड की सेना को नदी पार करने से तब तक रोकें, जब तक हम गाजीपुर न पहुंच जाएं। वहां यह बात उडा देना कि आजमगढ़ में अंग्रेज सेनापति जेल के अन्दर भूख-प्यास से मर रहे हैं और राजा कु वरसिंह गंगा पार करके जगदीशपुर में युद्ध करने चले गए हैं। इससे लुगार्ड कुछ सैनिक तो आजमगढ़ भेज देगा और कुछ जगदीशपुर। इस प्रकार उसकी सेना दो भागों में बंट जाएगी।"

"जो आज्ञा," हरेकृष्ण ने कहा, "मैं स्वयं कुछ सिपाही लेकर तमसा नदी पर चला जाता हूं।"

"हां, यह अच्छा रहेगा," कुवरसिंह ने सहमति प्रकट की, "तुम अंग्रेजों को रोके रखना और बाद में पीछे हटते हुए निघई में हमसे आ मिलना।"

हरेकृष्ण तत्काल तमसा नदी की ओर रवाना हो गया। सर लुगार्ड की सेना नावों के पुल से नदी पार कर ही रही थी कि हरेकृष्ण के सिपाहियों ने उन पर हमला कर दिया।

लुगार्ड की सेना नदी के उस पार ही रह गई।

"तोपें दागो !" उसने हुक्म दिया।

पुल के दोनों ओर तोपें खडी कर दी गईं और धांय-धांय दागी जाने लगीं। हरेकृष्ण के सिपाही आड में छिप गए।

लुगार्ड को मौका मिल गया। उसके सैनिक तेजी से नदी पार करने लगे। हरेकृष्ण के सिपाही पुल के इस पार तीन ओर छिप गए और पुल पार करने वाले सैनिकों पर छिप-छिपकर हमला करने लगे।

लुगार्ड की सेना ने पुल पार कर लिया, लेकिन एक कदम भी आगे न बढ़ सकी। इसी बीच लुगार्ड को उसके जासूसों ने बताया कि आजमगढ़ में अंग्रेज सेनापति भूख और प्यास के मारे मर रहे हैं और कुंवरसिंह गाजीपुर चला गया है। लुगार्ड ने हमला तेज कर दिया।

हरेकृष्ण के सिपाही पीछे हटने लगे और शाम होते- होते वे सब भाग खडे हुए।

लेकिन क्या तब भी राजा कुंवरसिंह जगदीशपुर पहुंच सके ?

निघई का युद्ध

सर लुगार्ड ने समझा कि उसे आजमगढ़ जाने से रोका जा रहा है। वह पूरी सेना लेकर तुरन्त आजमगढ़ रवाना हो गया।

वह दो-तीन मील ही बढ़ पाया था कि राजा कु वरसिंह ने अचानक हमला कर दिया। अब लुगार्ड को पूरा विश्वास हो गया।

अंधेरा बढ़ने लगा था। दोनों ओर सिपाही डटकर लङ रहे थे। लुगार्ड के सैनिक कटते जा रहे थे। उसने तुरन्त तोपें दागने का हुक्म दिया।

और जब तक तोपें दगने के लिए तैयार हुईं, तब तक कुंवरसिंह अपने सिपाहियों के साथ लापता हो गए।

लुगार्ड एक बार फिर हाथ मलता रह गया। उसने तुरन्त अपने सभी अफसरों को निकट बुलाया।

"देखो, कुंवरसिंह का पीछा करना जरूरी है," अफसरों के निकट आने पर लुगार्ड ने कहा, "आजमगढ़ में उसके दो हजार मिपाही हैं। हमें उनसे युद्ध करके अपने अफसरों को छुङाना है। उस मौके पर कहीं कुवरसिंह पीछे से हमला न कर दे। नहीं तो हम दोनों ओर से विस जाएंगे और हो सकता है कि हमें भी वहीं बन्दी हो जाना पङे, जहां मिलमैन, डेम्स

और मार्ककर बन्द हैं।

यह कहकर लुगार्ड ने अपने अफसरों की ओर गौर से देखा। 'हां, डगलस ठीक रहेगा, वह छिपकर हमला करते और पीछा करने में चतुर है।" लुगार्ड ने सोचा।

यह सोचकर लुगार्ड ने कहा, "ब्रिगेडियर डगलस अपनी सेना लेकर तुरन्त कुंवरसिंह का पीछा करें और उसे आजमगढ़ की ओर न आने दें।"

ब्रिगेडियर डगलस ने स्वीकृति में सिर हिलाया और अटेंशन खडा हो गया।

लुगार्ड ने फिर कहा, "यहाँ पर मैं यह घोषणा करता हूं कि जो कोई आदमी कुंवरसिंह को पकडकर हमारे सामने पेश करेगा, उसे पच्चीस हजार रुपया इनाम दिया जाएगा। अगर पकडाने वाला विद्रोही सिपाही हो या कुवरसिंह का ही कोई आादमी हो तो उसे माफी दे दी जाएगी।"

समस्त सेना में खुसफुसाहट होने लगी।

लुगार्ड ने फिर कहा, "हमारी यह घोषणा पूरे बिहार में फला दी जाए। शायद रुपए के लालच से ही कोई कुंवरसिंह को पकडा दे।"

अंधेरी रात थी। रास्ता अपरिचित था। फिर डर भी था किन जाने कहां पर कुवरसिंह की सेना छिपी हुई हो और वह अचानक हमला कर दे, अतः यहीं पडाव डाल दिया गया। ब्रिगेडियर डगलस ने अपने कुछ जासूसों को कुंवरसिंह का पता लगाने के लिए भेज दिया।

सुबह हुई। लुगार्ड अपनी सेना लेकर आजमगढ़ रवाना हुआ और डगलस निघई गांव की ओर। उसे जासूसों ने बताया था कि कुंवरसिंह निघई में पडाव डाले है।

डगलस निघई पहुंचा तो उसे कुछ भी नहीं दिखाई दिया।

'शायद कुंवरसिंह यहां से आगे बढ़ गया है या हो सकता है कि कहीं छिपा हुआ हो।' डगलस ने सोचा। अतः वह संभल गया और उसने अपने सैनिकों को सतर्क कर दिया।

डगलस को जो शक था, वही हुआ। गांव से वह कुछ ही आगे बढ़ पाया था कि कुंवरसिंह के सिपाहियों ने धावा बोल दिया। डगलस ने डटकर मुकाबला किया। कुंवरसिंह के सिपाही कम थे। वे पीछे हटते चले गए और डगलस के सैनिक उन्हें चार-पांच मील तक दबाते चले गए।

फिर एकाएक बाई भोर से डगलस पर हमला हो गया। डगलस के सैनिक उनका मुकाबला करने बाईं ओर बढ़े, तो दाहिनी ओर से दूसरी टुकडी ने हमला कर दिया।

अब डगलस की सेना तीन भागों में बंट गई। कु वरसिह की तीन टुकडियां अलग-अलग उस पर हमला कर रही थीं। डगलस के सैनिक उखडने लगे। वे पीछे हटे ही थे कि पीछे से भी कुंवरसिंह के सिपाहियों ने पेडों की आड से निकल निकल- कर शोर मचाते हुए हमला कर दिया। शोर से पता ही नहीं चल पा रहा था कि हमला करने वाले सिपाहियों की सही संख्या कितनी है। डगलस के सैनिक घबराकर भाग खडे हुए।

तब कुंवरसिंह विजयी शेर की तरह गंगा की ओर बढ़े। डगलस को आंखों के आगे अंधेरा छा गया। अब सर लुगार्ड को क्या मुंह दिखाऊंगा। उसने मुझ पर इतना विश्वास किया और मैं इतनी बडी सेना लेकर भी कुंवरसिंह को नहीं हरा सका। अब क्या श्राजमगढ़ लौट जाऊं ? नहीं, अब अपना काला मुंह लेकर आजमगढ़ नहीं जाऊंगा। तो क्या फिर भाग जाऊं ? किसी को भी पता नहीं चलेगा कि मैं कहां गया। नहीं, यह भी नहीं कर सकता। इस भारत में मैं कहां छिप सकता हूं.. तो फिर अब क्या करूं? डगलस सोचने लगा।

कुछ देर तक वह इसी तरह गहरी चिन्ता में डूबा रहा। वह सोचता रहा, "मुझे कुंवरसिंह का पीछा करना ही होगा। लडते-लडते अपनी जान दे दूंगा। कम से कम लुगार्ड के सामने मुझे अपना सिर तो नीचा नहीं करना पडेगा।"

यह सोचकर डगलस अपनी बिखरी हुई सेना को एकत्र करने में लग गया। कुवरसिंह के गंगा की ओर जाने के बाद अंग्रेजों के सैनिक वापस आकर जमा होने लगे थे। सभी के जमा होने पर डगलस ने तुरन्त कुवरसिंह का पीछा करने का हुक्म दिया। आगे-आगे डगलस बढ़ा और उसके पीछे उसकी सेना। उसका एकमात्र ध्येय कुंवरसिंह को पकडना था।

लेकिन क्या वह राजा कुंवरसिंह को पकड सका ?

एक डाल-डाल, दूसरा पात-पात

"रणदलन तुमने बहुत अच्छा किया कि यहां चले आए," राजा कुंवरसिंह ने कहा, "हमारे और हरेकृष्ण के सिपाही बहुत थक चुके हैं। बहुत लडे वे, बहुत वीरता दिखाई उन्होंने। अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। अब मैं चाहता हूं कि वे यही कुछ दिन श्राराम करें और तुम मेरे साथ जगदीशपुर चलो।"

"महाराज हमारे सिपाही फौलाद के बने हैं। वे थके नहीं हैं और जब तक पूरे बिहार में आपका एकछत्र राज नहीं हो जाता, तब तक वे क्षणभर भी आराम नहीं कर सकते," हरेकृष्ण ने तत्काल कहा।

"हरेकृष्ण !" कुंवरसिंह ने समझाया, "मौका पडने प २ सिपाही को अपनी थकान भुलाकर शत्रु से मुकाबला करना चाहिए। लेकिन अगर थकान मिटाने का मौका मिला हो तो अवश्य मिटा लेनी चाहिए। इससे स्फूर्ति बनी रहती है। तुम अपने सिपाहियों के साथ पांच-छः दिन यहां आराम करो। इस बीच अगर कहीं से अंग्रेजों की सेना आ रही हो तो उसे रोकना, उसे जगदीशपुर न आने देना। अगर हमें जगदीशपुर निघई में

में तुम्हारी जरूरत हुई, तो हम तुम्हें बुला लेंगे।" डगलस की सेना को हराकर वे सब घोसी आकर

मिले थे और फिर वहां से नागरा पहुंचकर उन्होंने पङाव डाला था। भब नागरा में ही वे सब मिलकर अपना भावी कार्यक्रम बना रहे थे । राजा कुवरसिंह चाहते थे कि हरेकृष्ण के सिपाही अब कुछ आराम कर लें ।

अभी वे कुछ निर्णय भी न कर पाए थे कि दो व्यक्ति घोङा दौङाते हुए पहुंचे। कुंवरसिंह भौर उनके साथी चौकन्ने हो गए ।

"महाराज की जय हो !" एक घुङसवार ने निकट आकर कहा, "डगलस की सेना पीछा कर रही है। वह निघई से आपका पीछा करता हुआ घोसी पहुंचा और अब यहां के लिए रवाना हो चुका है। लुगार्ड ने आपको पकङने के लिए पच्चीस हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। हम दूसरे रास्ते से चक्कर काटकर पहुंचे हैं। शाम तक वह यहां पहुंच जाएगा।"

"तो फिर कूच की तैयारी करो, हरेकृष्ण !" कुंवरसिंह ने बिजली की तरह हरेकृष्ण की ओर घमकर कहा और फिर उन दो घुङसवारों से बोले, "हम यहां से सिकन्दरपुर जाएगे और फिर काजीपुर । गांव वालों को कह देना कि वे डगलस को यह बात बता दें।"

"जो आज्ञा," एक घुङसवार ने कहा और फिर दोनों अपने घोङे दौङाते हुए चल दिए ।

कुंवरसिंह के समस्त सिपाही तुरन्त सिकन्दरपुर रवाना हो गए। वहां रातभर रहने के बाद दूसरे दिन प्रातः उन्होंने घाघरा नदी पार की और मनियार गांव चले गए ।

उधर डगलस नागरा पहुंचा। रातभर वहां रहा और दूसरे दिन सिकन्दरपुर रवाना हुआ । सिकन्दरपुर में उसे पता चला कि कुवरसिंह काजीपुर की और बढ़ा है। वह तुरन्त काजीपुर रवाना हो गया ।

काजीपुर पहुंचने पर डगलस को अपनी भूल मालूम हुई उसे उसके जासूसों ने आकर बताया कि कुवरसिंह ने काजी- पुर जाने की भृठी अफवाह उङाई थी, वास्तव में वह मनियार गांव गया है।

डगलस तुरन्त मनियार गांव रवाना हुआ। लेकिन रास्ते में ही उसने विचार बदल दिया। 'हो न हो, कुंवरसिंह फिर चालबाजी खेल जाए। उसका क्या भरोसा ? अब उसी की तरह चाल खेलना ठीक रहेगा,' डगलस ने सोचा और अपने घोङे की रास बांसडीह की ओर मोङ दी। पूरी सेना उसके पीछे-पीछे चलने लगी ।

२१ अप्रैल, १८५८ की सुबह । पिछली रात राजा कुंवरसिह और उनके सिपाही थके हुए मनियार गांव पहुंचे थे। गांव के जमीदारों ने धूमधाम से उनका स्वागत किया था और उनके खाने-पीने का पूरा प्रबन्ध किया था। अब सुबह होने पर वे सब अंगङाइयां लेकर उठ रहे थे कि..

...कि डगलस की सेना ने अचानक हमला कर दिया । कुंवरसिंह चौंके। 'तो डगलस भी हमारी तरह छापामार युद्ध करना जानता है,' उन्होंने सोचा। लेकिन अब अधिक सोचने का समय नहीं था। उनके सिपाही डगलस के सैनिकों से भिङ चुके थे ।

"संतिवार," कुंवरसिंह ने लपककर हरेकृष्ण की बगल में जाकर कान में कहा और रणदलनसिंह की ओर बढ़े ।

"संतिवार,' कुंवरसिंह ने उससे भी धीमे से कहा । फिर तो चारों और 'संतिवार-संतिवार' की खुसफुसाहट होने लगी ।

...और फिर कुवरसिंह का वही पुराना इशारा । युद्ध शुरू हुए अभी आधा घण्टा भी नहीं बीता था कि कुंवरसिंह

का जो सिपाही जिस ओर था, उसी ओर भाग खडा हुआ।

संतिबार गांव चारों ओर से जंगलों से घिरा हुआ था। दूसरा पहर होते-होते कुंवरसिंह के सभी सिपाही वहां पहुंच गए।

"आपको कहीं चोट लगी है क्या ?" हरेकृष्ण ने कु वर- सिंह के कपडों पर खून लगा देखकर पूछा।

"अरे नहीं, मामूली खरोंच लगी है, चिन्ता न करो," फु'बरसिंह ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"चिन्ता की तो बात है ही, महाराज ! हमारे रहते आप पर कोई बार करे, यह नहीं हो सकता," हरेकृष्ण ने कहा और फिर रणदलन की ओर मुडकर बोला, "रणदलसिंह, तुम महाराज के अंगरक्षक रहोगे। डगलस को मैं देख लूंगा।"

"अरे, मेरी चिन्ता मत करो, हरेकृष्ण !" कु ंवरसिंह ने चिन्तित होकर कहा, "देखो, अभी हमें बहुत बडे खतरे का सामना करना है। मुझे सूचना मिली है कि यहां अंग्रेज अफ-सरों ने हमें रोकने का हर प्रकार का प्रबन्ध कर दिया है और बाहर से भी सेना मंगा ली है और नावें डुबा दी हैं, जिससे हम उन नावों से नदी पार न कर सकें। उन्होंने गांव वालों को भी कडी चेतावनी दे दी है कि अगर एक भी आदमी ने कुवर- सिंह की मदद की, तो पूरे गांव को सजा दी जाएगी।"

"ऐसी चेतावनी तो अंग्रेजों ने बहुत दी है, महाराज ! लेकिन हम जानते हैं कि यहां का बच्चा-बच्चा आपका साथ देगा," हरेकृष्ण ने कहा।

"यह तो ठीक है, लेकिन दगाबाजों की भी कमी नहीं है। किसी व्यक्ति ने डगलस को हमारा संकेत बता दिया था," कुंवरसिंह ने कहा, "और फिर मद्रास गोलन्दाजों की दो पल्टनें बडी-बडी तोपें लेकर आ रही हैं। हमें आज रात ही

गंगा पार कर लेनी चाहिए।"

"जैसा आप ठीक समझें," हरेकृष्ण ने कहा।

"गंगा पार करने के लिए शिवपुर घाट ठीक रहेगा," कुंवरसिंह ने कुछ सोचकर कहा, "लेकिन यहां यह अफवाह फैल जानी चाहिए कि हम बलिया के निकट हाथियों से गंगा पार करेंगे। चलो, तैयारी करो।"

"जो आज्ञा," हरेकृष्ण ने कहा मोर दिया।

लेकिन इस अफवाह से क्या डगलस धोखे में आ सका ?

राजछत्र और तोप का गोला

२१ अप्रैल, १८५८ की ही शाम।

डगलस पीछा करता हुआ संतिवार पहुंचा। वहां मद्रास गोलन्दाजों की दो पल्टने उसकी मदद के लिए आ चुकी थीं। पश्चिम में सूर्य का गोला अभी काफी ऊंचाई पर था, लेकिन फिर भी उन घने जंगलों के बीच काफी अंधेरा छाया हुआ था। डगलस की सेना भयभीत थी। जाने कहां से कुंवर- सिंह हमला कर दे।

"कुंवरसिंह अपने सिपाहियों के साथ यहां से जा चुके हैं," डगलस को एक खास आदमी ने बताया, "वे आज ही बलिया के निकट हाथियों से गंगा पार करेंगे।"

"हूं..तो सीधे बलिया कूच किया जाए !" डगलस ने कुछ सोचते हुए हुक्म दिया और फिर उस आदमी की ओर मुड़कर बोला, "चलो, रास्ता दिखाओ।"

पूरी सेना और गोलन्दाज बलिया की ओर रवाना हो गए। डगलस गम्भीर मुद्रा में चलता रहा। चिन्ता की रेखाएं उसके माथे पर स्पष्ट दीख रही थीं। कुंवरसिंह दे चुके थे। हो सकता है, इस समय भी हो। यह सोचकर डगलस ने अपने चार उसे कई बार चकमा उन्होंने चकमा दिया तेज घुड़सवारों को

अपने निकट बुलाया और उनसे कुछ कहा। घुड्सवारों ने स्वीकृति में सिर हिलाया, अपने घोड़ों की रासें घुमाई और क्षणभर में चारों घोड़े अपने सवारों सहित चारों दिशाओं में तीर की तरह सरपट दौड़ने लगे।

डगलस बलिया में गंगा के निकट पहुंचा ही था कि एक घुड्सवार हांफता हुआ पहुंचा।

"हुजूर, आप यहां है और उधर कुंवरसिंह अपनी सेना को शिवपुर घाट से गंगा पार करा रहा है," घुड्सवार ने हांफते हुए कहा।

" शिवपुर घाट कितनी दूर है ?" डगलस ने पूछा।

"यहां से लगभग सात मील," घुड्सवार ने उत्तर दिया।

"क्या गंगा पार कर चुके हैं ?"

मैंने सेना को केवल घाट तक पहुंचते देखा है।"

डगलस ने आसमान की ओर देखा। सूर्य की आभा फीकी पड़ने लगी थी और वह लाल गोला-सा दिखाई देने लगा था। आसमान में लाली छा गई थी और अंधेरा होने में घण्टे-डेढ़ घण्टे की देर थी।

'अभी हमारे पास थोड़ा समय है। शायद उन्हें पकड़ लें,' डगलस ने सोचा और फिर तुरन्त हुक्म दिया, "शिवपुर घाट की और कूच किया जाए। पैदल सेना पीछे आती रहेगी। पहले घुड्सवारों और गोलन्दाजों को वहां जल्दी से जल्दी पहुंच जाना चाहिए। तोपें ले जाने में देर न हो। कुवरसिंह को हर हालत में रोकना जरूरी है।"

घुड्सवारों ने अपने घोड़ों को जोर से एड़ लगाई। तोपों और गोलन्दाजों को ले जाने वाले हाथियों को उनके महावतों ने अंकुश मार-मारकर भगाना शुरू किया।

लेकिन जब तक वे शिवपुर घाट पहुंचे, तब तक कुंवरसिंह

की पूरी सेना गंगा पार कर चुकी थी। में थी और किनारे पहुंचने वाली थी। केवल एक नाव गंगा

डगलस हाथ मलता रह गया। इस ओर एक भी नाव नहीं थी। फिर नाव से पीछा करना खतरनाक भी था। घुङसवार पहुंच चुके थे, लेकिन अब वे क्या कर सकते थे ? अभी तक केवल एक तोप पहुंच सकी थी।

"क्या तुम्हारा गोला इतनी दूर पहुंच सकता है ?" डगलस ने हाथ से नाव की ओर इशारा करके गोलन्दाज से पूछा।

"कोशिश कर सकता हूं," गोलन्दाज ने उत्तर दिया और तोप के मुंह में बारूद भरने लगा।

"नहीं, अब कोशिश करना बेकार है," डगलस ने निराश होकर कहा, "एक-दो गोले फेंककर क्या लाभ होगा। कुवर- सिंह की सेना बेकार ही सतर्क हो जाएगी। अब तो दूसरी जगह से गंगा पार करके अचानक हमला करना ही ठीक रहेगा।"

गोलन्दाज तोप में बारूद भरकर उसक मंह नाव की ओर कर चुका था, लेकिन डगलस की बात सुनकर वह चुपचाप खङा हो गया।

डगलस अपनी भौंहों और आंखों की कोरों को सिकोङकरा गौर से नाव की ओर देख रहा था। उसने देखा - गंगा की धार के निकट एक हाथी खङा है। नाव किनारे लगी। उसमें बैठे चार व्यक्ति उतरे और हाथी की ओर तेजी से बढ़े।

डगलस देखता रहा। हाथी ने अपनी सूंड से एक-एक व्यक्ति को उठाया और अपनी पीठ पर बिठा लिया। शाम के उस धु ंधलके में भी हाथी के मस्तक पर लगा चांदी का बख्तय चमक रहा था।

डगलस देखता रहा। सबके बैठ जाने के बाद हाथी पीछे की ओर घूमा। उसने एक कदम आगे बढ़ाया। तभी एक

व्यक्ति ने चांदी का चमकता छत्र खोला और उसे लेकर खड़ा हो गया।

डगलस के मस्तिष्क में बिजली-सी कौंधी। "गोला दागो !" वह हाथी की ओर इशारा कर पूरे जोर से चिल्लाया।

गोलन्दाज ने फुर्ती से तोप के पलीते पर आग लगा दी।

घांय..... जोर का शब्द हुआ। हाथी बिदका और सूंड उठाकर जोर से चिंघाड़ा, फिर वहीं पर गिर पड़ा।

डगलस ने खुश होकर गोलन्दाज की पीठ ठोकी। अंधेरा काफी बढ़ चुका था। डगलस नदी के पार अधिक न देख सका।

'वे कौन थे ?' डगलस सोचने लगा, 'वह राजछत्र-सा दीख रहा था। तो क्या उनमें कुंवरसिंह भी था ? राजछत्र का अधिकारी तो केवल कुंवरसिंह ही हो सकता है। क्या हाथी पर सवार वे चारों व्यक्ति मर गए होंगे ? क्या उनमें कुंवरसिंह भी रहा होगा ?'

२०

हाथ गंगापण

राजा कुवरसिंह की सेना में कोलाहल मच गया। सब दौडे-दौडे हाथी की ओर वापस भागे। हाथी जमीन पर पडा दम तोड रहा था।

राजा कुवरसिंह का अंगरक्षक रणदलनसिंह और छत्रधारी खवास गोले से उड चुके थे। चारों ओर उनके शरीर के चिथडे पडे हुए थे। महवत का सिर गायब था और राजा कुंवरसिंह का दायां हाथ आधा टूटकर लटक गया था।

हरेकृष्ण सकते में आ गया। सिपाहियों की आंखें भीग गईं। वे चुपचाप कुंवरसिंह के चारों ओर खडे हो गए। "घबराने की कोई बात नहीं है," पचहत्तर वर्ष के वृद्ध

और घायल राजा कु वरसिंह ने मुस्कराकर उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, "युद्ध में तो हमें सिर पर कफन बांधकर चलना ही पडता है। एक हाथ टूटा तो क्या हुआ। अभी दूसरा हाथ मौजूद है। जब तक शरीर में एक बूंद भी खून है, तब तक स्व- तन्त्रता के लिए युद्ध करूंगा !"

सिपाहियों की भुजाएं फडक उठीं। उनका हाथ बरबस तलवार की मूठ पर चला गया। आंखों से क्रोध और प्रतिहिंसा की चिनगारियां बरसने लगीं।

राजा कुवरसिंह ने हरेकृष्ण के कन्धे का सहारा लेकर खङा होने का प्रयत्न करते हुए कहा, "विधर्मी शत्रु के गोले को छूना भी हम अधर्म मानते थे और इन्हें देश से बाहर भगाने के लिए ही आज हमने क्रान्ति की थी। आज इन्हीं शत्रुओं के गोले से हमारी बांह अपवित्र हो गई है। कोई इसे काटकर गंगा मैया को चढ़ा दे।"

सबकी निगाह कुंवरसिंह की लटकती बांह पर टिक गईं। लेकिन उसे काटने का साहस किसमें था ! सब आंखें नीची किए चुप रहे, मानो सबके होंठ सी दिए गए हों।

"अच्छा तो यह काम मैं स्वयं करूंगा," राजा कुंवरसिह ने बाएं हाथ में तलवार लेकर एक ही झटके से अपनी दाहिनी बांह काट डाली। फिर उसे गंगा की धारा में फेंकते हुए कहा, "गंगा मैया ! ले अपनी भेंट ।"

सभी सिपाही सजल आंखों से देखते रहे और राजा कु वर- सिंह मुस्कराते रहे। हरेकृष्ण ने घाव पर कपङा लपेट दिया ।

दूसरे दिन, २२ अप्रैल को सुबह राजा कुंवरसिंह पालकी पर सवार होकर जगदीशपुर रवाना हुए। उनके साथ एक हजार पैदल सिपाही और कुछ घुङसवार थे । हरेकृष्ण छाया की तरह उनके साथ था ।

२५ जुलाई, १८५७ को दानापुर छावनी में विद्रोह शुरू हुआ था। तब से राजा कुंवरसिंह स्वतन्त्रता के दीवानों की सेना खङी करके आरा, गांगी, बीबीगंज, दुलौर, रोहतास, विजयगढ़, हटियाघाट, मैसौंध, ड्रमण्डगंज, बरौंध, माण्डा तथा कन्दूर; फिर रीवां, बांदा, कालपी, लखनऊ तथा अयोध्या; और फिर अतरौलिया, आजमगढ़, मरसाना, निघई, घोसी, सिकन्दरपुर, मनियारगांव, संतिवार आदि अनेक स्थानों पर अंग्रेजों से लङते-भिङते और हारते-जीतते २१ अप्रैल, १८५८

CHADDA

को शिवपुरघाट पहुंचे थे और वहां अपना दाहिना हाथ गंगा मैया के अर्पण कर तथा बाईं जांघ पर गहरा घाव लेकर पूरे नौ महीने बाद अपनी राजधानी जगदीशपुर लौट रहे थे।

अभी वे राजधानी से कुछ दूर ही थे कि उन्हें बाजे-गाजों की आवाज सुनाई देने लगी। उन्होंने निकट पहुंचने पर देखा- प्रागे-आगे बाजे वाले और उनके पीछे असंख्य लोगों की भीङ।

"महाराज क्रु'वरसिंह की जय !"

और फिर चारों दिशाएं राजा कुंवरसिंह की जय-जयकार से गूंज उठीं। स्वागत के बाजे जोर से बजने लगे।

कुंवरसिंह ने देखा-पूरा जगदीशपुर बन्दनवारों से सजाया हुआ है। हर घर पर राजा कुंवरसिंह का हरा झण्डा लहरा रहा है, हजारों की संख्या में लोग आकर उनके स्वागत में खङे हैं-युवक, वृद्ध, स्त्रियां, बच्चे सभी अपने राजा के दर्शन करने को आतुर। कुंवरसिंह अपनी रियाया को सजल नेत्रों से देखते रहे और दिशाएं उनकी जय-जयकार से गूंजती रहीं।

इतने में एक सिपाही आकर कुवरसिंह के पैरों पर गिय पङा और "भैया" कहकर फूट-फूटकर रोने लगा।

"कौन ? अमरसिंह ?" राजा ने बाएं हाथ से उसकी ठोढ़ी पकङकर उसका सिर उठाते हुए कहा।

"हां, भैया, मैं ही हूं अभागा !" अमरसिंह सिसक उठा।

हरेकृष्ण उसे देखते ही घोङे से उतर पङा। अमरसिंह क्षण भर गीली आंखों से उसे देखता रहा, फिर उससे लिपट गया।

"भैया, हरेकृष्ण ! नुझे माफ कर दो," अमरसिंह ने भर्राए गले से कहा, "मैं मैं..."

हरेकृष्ण की आखें डबडबा आईं, 'गला भर आया। उसने अमरसिह को कसकर अपने सीने से लगा लिया।

"यह राम, भरत और हनुमान का मिलन है," किसी ने

गद्गद कण्ठ से कहा।

"तो अमरसिंह और हरेकृष्ण, अब तुम दोनों में सुलह हो गई है न ?" कुंवरसिंह ने मुस्कराकर पूछा। "हां, भैया, अब हम दो शरीर और एक प्राण होकर

आपकी सेवा करेंगे," अमरसिंह ने आंसू पोंछते हुए उत्तर दिया, "और भैया, आपने भी मुझे क्षमा कर दिया है न ?"

"मैंने तो तुम्हें उसी दिन क्षमा कर दिया था, जिस दिन

यह सुना कि तुम हमसे नाराज होकर भी स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से लड़ते रहे," कुवरसिंह ने उत्तर दिया।

जगदीशपुर पर एक बार फिर राजा कुवरसिंह का शासन स्थापित हो गया। लेकिन क्या अंग्रेज बेखबर थे।

२१

एक और युद्ध

दूसरे दिन सुबह राजा कुवरसिंह घायल होने के कारण बिस्तर पर पडे थे। पायताने की ओर अमरसिंह बैठे थे। उसी समय हरेकृष्ण पहुंचा।

"महाराज की जय हो !" हरेकृष्ण ने झुककर प्रणाम करते हुए कहा, "हमें सूचना मिली है कि यहां से अंग्रेज भाग- कर आरा पहुंचे। वहां आजकल कैप्टन ली ग्रैण्ड सेनापति हैं। उन्होने वहां ली ग्रैण्ड को अपना हाल सुनाया। अब ली ग्रेण्ड सेना और तोपखाना लेकर जगदीशपुर चला आ रहा है।"

अमरसिंह झटके के साथ खडा हो गया भौर बोला, "महाराज, मैं उसका मुकाबला करने जाता हूं। हरेकृष्ण आपके पास रहेगा।"

"ठहरो, अमरसिंह," कुवरसिंह ने अपने एकमात्र बाएं हाथ के सहारे बैठते हुए कहा, "अभी तो मुझमें दम है। ली ग्रैण्ड का मुकाबला मैं करूंगा। तुम जगदीशपुर का शासन देखो।"

"महाराज में सेवक हूं," अमरसिंह ने कहा, "मेरे जीते जी आप युद्ध में जाएं और वह भी इस हालत में ! यह नहीं हो सकता। मुझे आज्ञा दें। मैं जाऊंगा।"

"अच्छा तुम नहीं मानते तो चलो, हम दोनों चलेंगे," कुंवरसिंह ने मुस्कराकर कहा, "मैं देखूंगा कि तुम युद्ध-संचालन करने लायक हो गए हो या नहीं। और हरेकृष्ण तुम यहां की देखभाल करना।"

"महाराज, मैं तो आपका अंगरक्षक हूं, "हरेकृष्ण ने हाथ जोड़कर कहा, "जहां श्राप जाएंगे, वहां मैं छाया की तरह आपके साथ रहूंगा।"

"अच्छा-अच्छा, तुम भी चलो। अब देर करने का समय नहीं," कुंवरसिंह ने उठते हुए कहा।

"हां महाराज, हरेकृष्ण को भी साथ ले चलिए," अमरसिंह ने शरारत से हरेकृष्ण की ओर देखकर कहा, "वहां देखना, मैं अधिक वीरता दिखाता हूं या हरेकृष्ण।"

तुरन्त तैयारी हो गई। राजा कुंवरसिंह अपने साथ हरे- कृष्ण, अमरसिंह और एक हजार सिपाही लेकर ली ग्रंण्ड का मुकाबला करने के लिए रवाना हो गए।

ली ग्रैण्ड की सेना जगदीशपुर के काफी निकट पहुंच चुकी थी। कुंवरसिंह के सिपाहियों ने उन पर हमला कर दिया।

बिहार के गदर के इतिहास में २३ अप्रैल, १८५८ का वह युद्धां भी हमेशा याद रहेगा। एक जांघ पर घातक घाव और दाहिना हाथ गायब - फिर भी कुवरिसह बाएं हाथ से जिस तरह लड़ते रहे, उसे क्या कभी भुलाया जा सकता है?

अंग्रेज सेना मैदान छोड़कर जंगल की ओर भागी। कुवर- सिह के सिपाहियों ने उनका पीछा किया। प्यास के मारे अंग्रेज सैनिक एक गन्दे तालाब की ओर लपके। लेकिन कुंवरसिंह के सिपाहियों ने उन्हें वहां से भी खदेड़ दिया।

अमरसिंह को देखकर लगता था, मानो वह उन भगोड़े सैनिकों के बीच संहार का ताण्डव नृत्य कर रहा हो। जिधर

वह अपना घोङा दौङाता, उधर के ही सैनिक साफ हो जाते। ली ग्रैण्ड कुछ सैनिकों के साथ एक ओर युद्ध कर रहा था। अमरसिंह उनके बीच कूद पङा। सैनिकों ने एक साथ उस पर वार किया। वह वार बचाकर ली ग्रैण्ड की ओर लपका। ली ग्रैण्ड ने रोकना चाहा, लेकिन तब तक अमरसिंह की चमचमाती तलवार उसकी गर्दन पर पङ चुकी थी।

ली ग्रैण्ड के मरते ही अंग्रेज सैनिकों में भगदङ मच गई। जिसे जिधर रास्ता मिला, वह उधर ही भाग खङा हुआ। चारों ओर लाशें ही लाशें दिखाई देने लगीं।

आज भी विजयश्री कु वरसिंह के हाथ आई।

"आज की विजय का पूरा श्रेय अमरसिंह जी को है, महाराज," हरेकृष्ण ने कुंवरसिंह से कहा, "जिस तरह इन्होंने ली ण्ड को मारा, उससे अंग्रेजों के छक्के छूट गए।"

"नहीं, महाराज," अमरसिंह ने टोका, "मैंने तो केवल व्यक्तिगत वीरता दिखाई। युद्ध-संचालन तो हरेकृष्ण ने ही किया।"

राजा कुंवरसिंह जोर से हंस पङे, बोले, "उस दिन भी तुम इसी तरह झगङा करके भागे थे और आज भी यही झगङा कर रहे हो, अमरसिंह !"

"हां, महाराज, मैं आज भी झगङा कर रहा हूं," अमरसिंह ने कहा, "लेकिन अब दूसरे दृष्टिकोण से। उस दिन मैं अपने अहंकार में अन्धा था। आज सत्य कह रहा हूं।"

"नहीं महाराज, ये सत्य नहीं कह रहे हैं," हरेकृष्ण ने बीच में टोककर कहा, "इनसे पूछिए, क्या इन्होंने केवल ली ग्रैण्ड को ही मारा ? अन्य अंग्रेजों को नहीं मारा, उन्हें नहीं खदेङा ?"

"अच्छा-अच्छा, लङो मत," कुवरसिंह ने हंसकर कहा, "मैं फैसला सुनाता हूं। सुनो, उस दिन अमरसिंह ने सैनिकों के बीच

घुसकर डुमराव के राजा को मारा था और आज भी उसने अंग्रेज सेना के बीच घुसकर ली गैण्ड को मारा। दोनों बार अमरसिंह ने व्यतिगत वीरता दिखाई, लेकिन दोनों बार उसके दृष्टिकोण में अन्तर रहा। पहली बार उसने अपनी पुरानी व्यक्तिगत दुश्मनी का बदला लिया था और इस बार उसने अंग्रेज सेना का मनोबल भंग करने के लिए उनके सेनापति को मारा । अतः अमरसिंह ने इस बार जो व्यक्तिगत वीरता दिखाई, वह सर्वथा प्रशंसनीय है।"

"देखा," हरेकृष्ण जोर से सिर हिलाकर अमरसिंह से बोला, "मेरी बात सही है न ?"

अमरसिंह कुछ बोलने ही वाला था कि कुवरसिंह ने बीच में कहा, "अच्छा, चलो अब । जल्दी जगदीशपुर चलो। मेरे दाहिने कन्धे में दर्द हो रहा है।"

दोनों की निगाह अचानक कुंवसिंह के बांहहीन कन्धे पर पडी । उनकी आंखें सजल हो उठीं। तुरन्त पालकी मंगाई गई और सब जगदीशपुर रवाना हो गए ।

लेकिन क्या राजा कुंवरसिंह इस पीडा से मुक्ति पा सके ?

२२

अनन्त यात्रा पर

ली ग्रंण्ड को हराकर आने वाली इस सेना का जगदीशपुर में धूमधाम से स्वागत हुआ।

असंख्य लोगों की भीङ के सामने खङे होकर कुवरसिंह ने कहा, "श्राज हमारा जदीशपुर स्वतन्त्र है। मैं पूरे बिहार में क्रान्तिकारी सरकार के निर्माण की घोषणा करता हूं। मेरे बाद इस क्रान्तिकारी सरकार के उत्तराधिकारी अमरसिंह होंगे। हरेकृष्ण यहां के सर्वोच्च सेनापति बने रहेंगे..."

इससे आगे कु'वर्णसंह न बोल पाए। उनके कंधे और जांघ में जोर का दर्द उठने लगा।

उन्हें तुरन्त महल में पहुंचाया गया और शयनागार में पलंग पर लिटा दिया गया।

राजा कुंवरसिंह ने २३ अप्रैल की रात बङे कष्ट से बिताई। पूरे जगदशीशपुर में एक ओर स्वतन्त्रता प्राप्त होने की खुशी उमङ रही थी और दूसरी ओर राजा कुवरसिंह के कष्ट से दुःख की घटनाएं। अच्छे से अच्छे वैद्य दौङे चले आए। हर प्रकार का इलाज किया गया। लेकिन घावों में जो जहर पैदा हो गया था, वह बढ़ता चला गया।

२४ अप्रैल की सुबह हुई, फिर रात। कुवरसिंह का शरीर

जहर से नीला पड़ता चला गया।

फिर २५ अप्रैल की सुबह हुई और रात। कुंवरसिंह का हिलना-डुलना तक बन्द हो गया।

और फिर श्राई २६ अप्रैल, १८५८ की वह मनहूस सुबह।। राज्य के सभी प्रमुख व्यक्ति उसी शयनागार में बैठे हुए थे। राजा कुंवरसिंह ने आंखें खोलकर इधर-उधर देखा और फिर उनकी आंखें पायताने पर बैठे अमरसिंह पर टिक गईं।

अमरसिंह निकट चला आया। कुंवरसिंह ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। अमरसिंह ने अपने दोनों हाथों से उनका हाथ थाम लिया और सिसककर रोने लगा। सभी की आंखें सजल हो उठीं।

"रोओ मत, अमरसिंह !" कुवरसिंह ने धीमी आवाज में अटक-अटककर कहा, "जो इस दुनिया में आया है, वह जाएगा ही। मुझे तो भगवान ने बहुत लम्बी उम्र दी। मेरे बाद तुम जगदीशपुर को देखना। पूरा जगदीशपुर मेरे लिए पुत्र के समान रहा। तुम भी इस पर अपने प्राण तक न्यौछावर करने में पीछे न रहना। और हरेकृष्ण को सदा अपने साथ रखना। उसकी हरेक राय मानना.."

कहते-कहते राजा कुंवरसिंह के माथे पर पसीने की बूंदें चमक उठीं। आखें कष्ट से बरबस बन्द हो गईं।

"भैया !" अमरसिंह ने रोते-रोते कहा, "अधिक न बोलो। आपको कष्ट हो रहा है।"

लेकिन वहां उसकी बात सुनने वाला कहां था। सुनने वाला तो चिरनिद्रा में लीन हो चुका था।

"भैया ! भैया !!" अमरसिंह ने जोर से कहा। कोई उत्तर नहीं।

"भैया !" अमरसिंह न फिर जोर से पुकारा। लेकिन

ओर कुंवरसिंह कौन उत्तर देता ? उत्तर देने वाला तो अनन्त यात्रा पर रवाना हो चुका था। अमरसिंह दोनों हाथों से मुंह छिपाकर दहाड मारकर रो उठा।

सारे जगदीशपुर में कोहराम मच गया। जो जिस हालत में था, राजा कुंवरसिंह की मृत्यु की सूचना पाकर उसी हालत में महल की ओर दौड पडा।

लेकिन अब राजा कुंवर सिंह कहां थे ? वहां तो केवल मिट्टी का शरीर पडा था।